mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-97 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा
10 अप्रैल 2025 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर
रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

युजवेंद्र चहल के ...
@ पेज 7

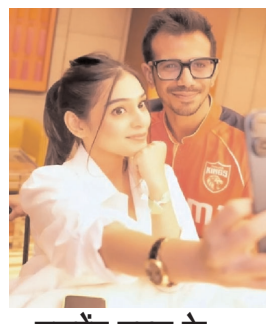

चारधाम की यात्रा 30 अप्रैल से होगी शुरू, 15 लाख से अधिक रजिस्ट्रेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस महीने के अंत से शुरू होने वाली चारधाम यात्रा के लिए श्रद्धालुओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है जिसके लिए अब तक 15 लाख से अधिक श्रद्धालु अपना पंजीकरण करवा चुके हैं। उत्तराखंड के

● हेलीकॉप्टर सेवाओं के लिए बुकिंग शुरू

पर्यटन सचिव सचिन कुर्वे ने यहां बताया कि विभाग ने चारधाम यात्रा को लेकर तैयारियां तेज कर दी हैं जिसके तहत गत 20 मार्च से तीर्थयात्रियों का ऑनलाइन पंजीकरण शुरू कर दिया गया था। उन्होंने बताया कि इस बार यात्रा के लिए पंजीकरण को आधार कार्ड से जोड़ा गया है और 'फेशियल रिकॉग्निशन' के जरिए 'ऑन स्पॉट' (मौके पर) पंजीकरण की व्यवस्था की गयी है। कुर्वे ने बताया कि अब तक 15 लाख से अधिक श्रद्धालु चारधाम यात्रा के लिए अपना पंजीकरण करवा चुके हैं। उन्होंने कहा कि जो यात्री ऑनलाइन पंजीकरण नहीं करा पा रहे हैं, उनके लिए 'ऑन स्पॉट' पंजीकरण की सुविधा दी गई है और यह पंजीकरण भी आधार से जुड़े 'फेशियल रिकॉग्निशन' तकनीक के ज़रिए होगा। पर्यटन सचिव ने बताया कि 'ऑन स्पॉट' पंजीकरण विशेष रूप से उन श्रद्धालुओं के लिए है जो विभिन्न बस एसोसिएशनों के माध्यम से यात्रा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि बसों से यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं का पंजीकरण उन होटल या धर्मशालाओं में ही कर दिया जाएगा जहां वे ठहरेंगे। कुर्वे ने कहा कि इसके लिए उन्हें पंजीकरण काउंटर पर जाने की आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रक्रिया के संचालन के लिए हरिद्वार में 15 और ऋषिकेश में 25 मोबाइल आधारित पंजीकरण टीमें नियुक्त की गई हैं। उन्होंने बताया कि होटल एसोसिएशन और तीर्थ पुरोहितों के साथ बैठक कर उनके सुझावों को अमल में लाया गया है। हेलीकॉप्टर सेवा को लेकर भी श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है और मई माह के लिए टिकटों की बुकिंग शुरू हो गयी है। कुर्वे ने बताया कि सभी टिकट बुकिंग पहचानपत्र के आधार पर की गई हैं। उन्होंने कहा कि यात्रियों से फोन पर संपर्क कर यह पूछा जा रहा है कि उनकी टिकट किस माध्यम से बुक हुई है और कितनी राशि ली गई है। सचिव ने बताया कि अब तक करीब 2300 यात्रियों को कॉल की जा चुकी है जिनमें से 1600 से बात हो चुकी है और अधिकतर यात्रियों ने हेलीकॉप्टर का टिकट स्वयं बुक कराने की जानकारी दी है। तीस अप्रैल को अक्षय तृतीया के पर्व पर उत्तरकाशी जिले में स्थित गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिर के कपाट खुलने के साथ ही इस वर्ष की चारधाम यात्रा शुरू हो जाएगी। रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ के कपाट दो मई को जबकि चमोली जिले में बदरीनाथ के कपाट चार मई को खुलेंगे। इस बार राज्य सरकार ने ऑनलाइन पंजीकरण के साथ-साथ 40 फीसदी 'ऑन स्पॉट' पंजीकरण का निर्णय भी लिया है जिससे इंटरनेट का उपयोग नहीं कर पाने वाले श्रद्धालुओं को कोई परेशानी नहीं उठानी पड़े।

संक्षिप्त समाचार

पुर्तगाल के बाद स्लोवाकिया पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

ब्रातिस्लावा (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का बुधवार को यहां राष्ट्रपति भवन में स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी ने स्वागत किया। राष्ट्रपति मुर्मू पुर्तगाल के दो दिवसीय राजकीय दौरे के समापन के बाद स्लोवाकिया पहुंचीं। वह इस देश की यात्रा करने वाली दूसरी भारतीय राष्ट्रपति हैं। लोक पोशाक पहने एक जोड़े ने 'ब्रेड और नमक' के साथ उनका पारंपरिक स्लोवाक स्वागत किया। राष्ट्रपति कार्यालय ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी ने ब्रातिस्लावा में राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का स्वागत किया। लोक पोशाक पहने एक जोड़े ने 'ब्रेड और नमक' के साथ उनका पारंपरिक स्लोवाक स्वागत किया।

राष्ट्रपति को सलामी गारद प्रदान किए जाने के साथ उनका औपचारिक स्वागत किया गया।'' विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज ब्रातिस्लावा में राष्ट्रपति भवन पहुंचीं। स्लोवाकिया के राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रिनी ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया और सलामी गारद प्रदान किए जाने के साथ औपचारिक स्वागत किया। यह पिछले लगभग तीन दशकों में भारत के किसी राष्ट्रपति की स्लोवाकिया की पहली यात्रा है।'' स्लोवाक दंपति ने मुर्मू को ब्रेड दी जिसे उन्होंने नमक लगाकर खाया।

भूकंप पीड़ितों की मदद करने पर संयुक्त राष्ट्र ने की भारत की तारीफ

म्यांमार (एजेंसी)। म्यांमार भूकंप पीड़ितों की बढ़चढ़कर मदद करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने भारत की जमकर सराहना की है। यूएन के एक अधिकारी ने कहा है कि म्यांमार में आए विनाशकारी भूकंप के बाद मानवीय सहायता प्रदान करने में भारत एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभरा है, जिसने त्वरित और पर्याप्त सहायता प्रदान कर राहत प्रयासों को मजबूत किया है। म्यांमार में मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (ओसीएचए) के प्रमुख सज्जाद मोहम्मद साजिद ने 'ऑपरेशन ब्रह्मा' के तहत संसाधनों की तीव्र तैनाती के लिए भारत की प्रशंसा की, जिसके तहत आपदा के कुछ दिनों के भीतर खाद्य,

चिकित्सा आपूर्ति और फील्ड अस्पताल सहायता सहित 1,000 मीट्रिक टन से अधिक मानवीय सहायता पहुंचाई गई। बता दें कि म्यांमार में 28 मार्च को 7.7 तीव्रता का भूकंप आया था। साजिद ने कहा, ''संसाधनों और सुविधाओं की शीघ्र तैनाती से बहुत से लोगों को मदद मिली, विशेष रूप से मांडले के शहरी क्षेत्रों में।'' उन्होंने उल्लेख किया कि भारत ने सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों की सहायता के लिए 200 सदस्यीय खोज एवं बचाव दल और चिकित्साकर्मियों को भी भेजा है। साजिद ने कहा कि मांडले में एक फील्ड अस्पताल की स्थापना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि कई स्थानीय अस्पताल और ऑपरेशन थिएटर अब भी बंद पड़े हैं तथा ट्रॉमा देखभाल बहुत सीमित है। उन्होंने कहा, ''यह फील्ड अस्पताल ऐसी स्थिति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जहां बुनियादी ढांचा अब भी उबरने की कोशिश कर रहा है।''

ड्रंक एंड ड्राइव चेकिंग में शामिल पुलिसकर्मी ही पी कर हो गए टुन

कोल्लम (एजेंसी)। केरला के कोल्लम जिले में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां ड्रंक एन्ड ड्राइव चेकिंग में शामिल पुलिसकर्मी ही पी कर टुन पाए गए हैं। लोगों ने इन पुलिसकर्मियों को पकड़ लिया। इस पूरी घटना का वीडियो भी सामने आया है। घटना की जानकारी मिलने के

बाद नशे में धुत पकड़े गए पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की गई है। कोल्लम ग्रामीण स्क्रने दो पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है। केरला के कोल्लम ग्रामीण क्षेत्र से एक चौंका देने वाली खबर सामने आई है। यहां पठानपुरम इलाके में रात्रि गश्त में शामिल ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों की जिम्मेदारी रात्रि गश्त और नशे में गाड़ी चला रहे लोगों को पकड़ने की थी लेकिन दोनों पुलिस कर्मी ही नशे में धुत हो गए। कोल्लम ग्रामीण स्क्रने पुलिस कंट्रोल रूम में स्ठ्ठ सुमेश लाल और ड्राइवर सी महेश को निलंबित कर दिया है। इस पूरी घटना की जानकारी पुलिस के आला अधिकारियों को भी तब मिली उन्हें ये तस्वीरें मिलीं जिसमें स्थानीय लोगों ने नशे में धुत पुलिसकर्मियों की गाड़ी रोकने की नाकाम कोशिश की। इस घटना का पूरा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

अधिकतम मांग 5029 मेगावाट तक पहुंची

दिल्ली में गर्मी बढ़ने के साथ ही बिजली की डिमांड बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की राजधानी दिल्ली में गर्मी बढ़ने के साथ ही शहर में बिजली की मांग 5029 मेगावाट के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई है। आने वाले महीनों में मांग 9000 मेगावाट तक पहुंचने की उम्मीद है, जो शहर के बिजली बुनियादी ढांचे के लिए एक बड़ी चुनौती है। मंगलवार को दोपहर 3:30 बजे 5029 मेगावाट दर्ज की गई, जो इस सीजन में शहर में अब तक की सबसे अधिक बिजली की मांग है। राज्य भार प्रेषण केंद्र के अनुसार, दिल्ली में बिजली की एक और रिकॉर्ड-तोड़ उपलब्धि देखने को मिल सकती है, इस गर्मी में पहली बार अधिकतम बिजली की मांग 9000 मेगावाट तक पहुंचने की उम्मीद है। पिछले साल राष्ट्रीय राजधानी 8656 मेगावाट की डिमांड दर्ज की गई थी। बीएसईएस डिस्कॉम--बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड (बीआरपीएल) और बीएसईएस यमुना पावर लिमिटेड (बीवाईपीएल)--दक्षिण, पश्चिम, पूर्व

और मध्य दिल्ली में 50 लाख से अधिक उपभोक्ताओं और 2 करोड़ निवासियों को निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की तैयारी कर रही है।एक आधिकारिक बयान के अनुसार, इन तैयारियों में कई राज्यों के साथ पावर बैंकिंग व्यवस्था, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) का उपयोग किया जा रहा है। अनुमानों के अनुसार, बीआरपीएल के अधिकार क्षेत्र में--दक्षिण और पश्चिम दिल्ली को कवर करते हुए--बिजली की मांग 2024 में 3809 मेगावाट से बढ़कर लगभग 4050 मेगावाट तक पहुंचने की उम्मीद है। बीवाईपीएल के क्षेत्र में, जिसमें पूर्वी और मध्य दिल्ली शामिल हैं, पीक डिमांड 1900 मेगावाट तक पहुंचने की संभावना है, जो पिछले साल के 1882 मेगावाट से थोड़ा अधिक है। बीएसईएस डिस्कॉम ने इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए दीर्घकालिक बिजली खरीद समझौते (पीपीए) और बैंकिंग व्यवस्थाएं हासिल की हैं।

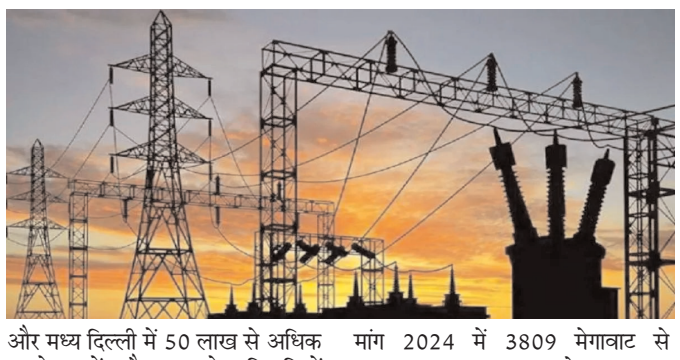

मुस्लिम युवती ने धर्म परिवर्तन किया और हिंदू प्रेमी से शादी रचाई

फर्रुखाबाद (एजेंसी)। यूपी के फर्रुखाबाद जिले से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया। यहां एक मुस्लिम युवती ने अपने पति (शौहर) को छोड़ दिया और हिंदू युवक से शादी कर ली। मुस्लिम युवती ने प्यार की खातिर धर्म परिवर्तन भी कर लिया और सबीना से सुमन बन गई। सबीना ने सुमन बनकर हिंदू युवक से शादी की और अपना धर्म परिवर्तन किया। दरअसल पड़ोसी जनपद कासगंज की रहने बाली सबीना की

शादी बदांयू के रहने वाले सद्दाम के साथ हुई थी। लेकिन बाद में सबीना को हिंदू युवक विजय (निवासी- अमृतपुर) से प्यार हो गया। सबीना ने 8 महीने पहले पति का घर छोड़ दिया और प्रेमी विजय के साथ आ गई। आरोप है कि सबीना का पति सद्दाम उसे परेशान करता था और प्रताड़ित किया करता था इसलिए सबीना ने सनातन धर्म अपनाने के बारे में सोचा। सबीना से सुमन बनी युवती की शादी विजय से एक मंदिर में हिंदू रीति-रिवाज से संपन्न हुई। धर्म परिवर्तन करने वाली सबीना ने ये भी कहा कि उसके पूर्वज पहले हिंदू थे। इसी वजह से उसने अपनी मर्जी से धर्म परिवर्तन कर घर वापसी की है।

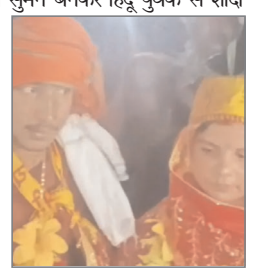

तीन बच्चों की मां ने पहले अपना धर्म बदला, फिर 12वीं के छात्र से की शादी

उसकी दो बार शादी हो चुकी है, यह उसकी तीसरी शादी है

अमरोहा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के अमरोहा में तीन बच्चों की मां ने हिंदू धर्म अपनाने के बाद बुधवार को एक मंदिर में 12वीं कक्षा के छात्र के साथ विवाह कर लिया। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हसनपुर के पुलिस क्षेत्राधिकारी दीप कुमार पंत के मुताबिक, पूर्व में शबनम नाम से जाने जानी वाली 30 वर्षीय महिला अब शिवानी बन गई है तथा उसके माता पिता जीवित नहीं हैं और पहले उसकी दो बार शादी हो चुकी है तथा यह उसकी तीसरी शादी है। उन्होंने कहा कि शिवानी ने पहली शादी मेरठ में एक व्यक्ति से की थी, लेकिन उसका तलाक हो गया और इसके बाद उसने सैदनवली निवासी तौफीक से शादी की जो 2011 में एक सड़क दुर्घटना में अपंग हो गया। पंत ने कहा कि हाल के महीनों में यहां के रहने वाले 12वीं कक्षा के छात्र शिवा के साथ उसका संबंध बना और उसने 18 साल के लड़के से शादी कर ली। पुलिस के मुताबिक, पिछले शुक्रवार को शबनम ने तौफीक से तलाक ले लिया और हिंदू धर्म अपना लिया जिसके बाद उसने अपना नाम शिवानी रख लिया और एक मंदिर में शिवा से विवाह कर लिया। शिवा के पिता दाताराम सिंह ने संवाददाताओं को बताया कि उन्होंने अपने बेटे के निर्णय का समर्थन किया और परिवार खुश है। उन्होंने कहा,÷हम यही उम्मीद करते हैं

कि दोनों शांति से जीवन बिताएं।÷
इसी तरह का एक मामला यूपी को फर्रुखाबाद जिले में देखने को मिला है। दरअसल यहां एक मुस्लिम युवती ने अपने पति (शौहर) को छोड़ दिया और हिंदू युवक से शादी कर ली। मुस्लिम युवती ने प्यार की खातिर धर्म परिवर्तन भी कर लिया और सबीना से सुमन बन गई। सबीना ने सुमन बनकर हिंदू युवक से शादी की और अपना धर्म परिवर्तन किया। दरअसल पड़ोसी जनपद कासगंज की रहने बाली सबीना की शादी बदांयू के रहने वाले सद्दाम के साथ हुई थी। लेकिन बाद में सबीना को हिंदू युवक विजय (निवासी- अमृतपुर) से प्यार हो गया। सबीना ने 8 महीने पहले पति का घर छोड़ दिया और प्रेमी विजय के साथ आ गई।

भीषण गर्मी सहने के लिए रहें तैयार!

बढ़ते पारे के बीच दिल्ली सरकार ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी में अप्रैल में ही चिलचिलाती धूप और भीषण गर्मी से लोगों का बुरा हाल है। अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच रहा है। तापमान बढ़ने के कारण भीषण गर्मी और लू की स्थिति के बीच दिल्ली सरकार ने मंगलवार को लोगों को सुरक्षित रहने, लू और गर्मी से संबंधित बीमारियों से बचने के लिए एहतियाती कदम उठाने की सलाह दी। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी एक एडवाइजरी में चेतावनी दी गई है कि अत्यधिक गर्मी या लू लगने से खासकर बच्चों, गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों, बाहर काम करने वालों और पहले से ही बीमार लोगों जैसे कमजोर लोगों में स्वास्थ्य संबंधी गंभीर जटिलताएं हो सकती हैं।
दिल्ली में सोमवार को इस मौसम में पहली बार लू की स्थिति दर्ज की गई और अधिकतम तापमान 40.2 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। दिल्ली में फिलहाल 'येलो अलर्ट' जारी है, जो बुधवार तक लागू रहेगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग के

'कलर कोड' के अनुसार, 'येलो अलर्ट' का मतलब है ''सावधान रहें'' और लोगों को गर्मी के संपर्क में आने से बचने, हल्के, हल्के रंग के और ढीले सूती कपड़े पहनने तथा अपने सिर को ढकने की सलाह दी जाती है।
लू के लक्षण: लू लगने के लक्षणों को 'हीट स्ट्रेस' के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें तेज बुखार, बेहोशी, सूखी और लाल त्वचा, उल्टी, मांसपेशियों में ऐंठन, सांस लेने में तकलीफ और भ्रम के लक्षण शामिल हैं। कुछ मामलों में व्यक्ति ऐंठन का अनुभव कर सकता है या बेहोश हो सकता है।
स्वास्थ्य विभाग ने सलाह दी है कि ऐसे लक्षण दिखने वाले किसी भी व्यक्ति को बिना देरी किए अस्पताल ले जाना चाहिए। शरीर में पानी की कमी नहीं होने के महत्व पर जोर देते हुए प्यास नहीं होने पर भी भरपूर मात्रा में तरल पदार्थ पीने की सलाह दी गई है। लोगों से बाहर जाते समय पानी साथ रखने और उबला हुआ या आरओ-फिल्टर किए गए पानी जैसे सुरक्षित पेयजल स्रोतों का उपयोग करने का आग्रह किया गया है। शरीर में पानी की कमी को पूरा करने और आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए तरबूज, खीरा, संतरा, नींबू और टमाटर जैसे मौसमी फलों एवं उन सब्जियों के सेवन को प्रोत्साहित किया गया है, जिनमें पानी की मात्रा अधिक होती है। एडवाइजरी में कहा गया है कि धूप में निकलने के जोखिम को कम करने के लिए लोगों को दोपहर 12 बजे से अपराह्न तीन बजे के बीच चरम गर्मी की अवधि के दौरान घर के अंदर रहने की सलाह दी गई है।

नवकार महामंत्र कार्यक्रम में बिना जूते पहने पहुंचे मोदी

लोगों के बीच बैठे, बोले- संसद भवन में जैन धर्म का प्रभाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज नवकार महामंत्र दिवस में हिस्सा लिया। उन्होंने दिल्ली के विज्ञान भवन में ÷नवकार महामंत्र÷ का जाप किया। महावीर जयंती पर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म का जश्न मनाया जाता है। पवित्र जैन मंत्र के जरिए शांति, आध्यात्मिक जागृति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए 108 देशों के लोग भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। नवकार महामंत्र कार्यक्रम में श्रद्धा प्रकट करने के लिए पीएम मोदी बिना जूते पहने आए। वे मंच पर नहीं बैठे, बल्कि सभी लोगों के साथ बैठे।
पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा कि जैन धर्म ने भारत की पहचान स्थापित करने में अमूल्य भूमिका निभाई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इसके मूल्य आतंकवाद, युद्ध और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी वैश्विक चुनौतियों से पार पाने में मददगार

हैं। मोदी ने %नवकार महामंत्र दिवस% के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि उनकी सरकार इस प्राचीन धर्म की विरासत और शिक्षाओं के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि तीर्थंकरों की शिक्षाओं और मूर्तियों के जरिए इस धर्म का प्रभाव संसद भवन पर दिखाई देता है
अनेकांतवाद के सिद्धांत का हवाला देते हुए मोदी ने कहा कि दुनिया को इसकी बहुत जरूरत है क्योंकि इसके तहत विभिन्न दृष्टिकोणों की सराहना की जाती है। अनेकांतवाद जैन धर्म में गैर-निरपेक्षता को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख सिद्धांत है। इसके तहत यह माना जाता है कि अंतिम सत्य को अलग-अलग तरीके से देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में जीवन की पारस्परिक निर्भरता का खासा महत्व है और इसलिए इसमें मामूली हिंसा पर भी रोक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह शांति, सद्भाव और पर्यावरण संरक्षण के लिए सबसे अच्छा सबक है। मोदी ने कहा कि जैन साहित्य भारत की आध्यात्मिक भव्यता की रीढ़ है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार इसे संरक्षित करने के लिए कई कदम उठा रही है, जिसमें इसके प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण और पाली व प्राकृत को शास्त्रीय भाषा घोषित करने की हालिया योजना भी शामिल है।

एयर इंडिया की फ्लाइट में यात्री ने दूसरे यात्री पर की पेशाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली से बैंकॉक जा रही एक उड़ान के दौरान एयर इंडिया के एक यात्री ने साथी यात्री पर कथित तौर पर पेशाब की है। सूत्रों के अनुसार, बुधवार को ये फ्लाइट बैंकॉक जा रही थी, इसी दौरान ये घटना घटी। उन्होंने बताया कि एयर इंडिया ने इस घटना की सूचना नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) को दे दी है। घटना के बारे में पूछे जाने पर नागरिक उड्डयन मंत्री के राममोहन नायडू ने बुधवार को कहा कि मंत्रालय इस घटना का संज्ञान लेगा और एयरलाइन से बात करेगा। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी में एक कार्यक्रम से इतर कहा, %अगर कोई गलत काम हुआ है, तो हम आवश्यक कार्रवाई करेंगे। अप्रैल 2024 में ऑस्ट्रेलिया के एक विमान में भी पेशाब कांड हुआ था। एक हवाई यात्री ने ऐसी जगह पेशाब कर दी थी, जिसके बाद पूरे विमान में बवाल मच गया था। मामला सिडनी हवाई अड्डे का था।

प्रदेश में निरंतर बढ़ रहा है सिंचाई का रकबा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने कहा है कि प्रदेश में बेहतर जल प्रबंधन, जल संरक्षण एवं विभिन्न सिंचाई योजनाओं के माध्यम से सिंचाई का रकबा निरंतर बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को संपन्न मंत्रि-परिषद की बैठक में पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना अंतर्गत मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ (शिवना) दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई परियोजना लागत राशि 2932 करोड़ 30 लाख रूपये, सैंच्य क्षेत्र 60 हजार हैक्टेयर की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वीकृत परियोजना से मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ तहसील के 32 ग्राम एवं मंदसौर तहसील के 115 ग्राम लाभान्वित होंगे। जल संसाधन मंत्री श्री सिलावट ने बताया कि इस परियोजना की कुल लागत 3104 करोड़ 60 लाख रूपये है तथा इससे मंदसौर जिले की मल्हारगढ़ एवं मंदसौर तहसील के 60 हजार हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होगी एवं 147 ग्रामों के लगभग 35 हजार किसान परिवार लाभान्वित होंगे। परियोजना अंतर्गत शिवना नदी में बैराज का निर्माण कर वर्षा ऋतु में पम्पिंग के माध्यम से जल उद्वहन कर ग्राम पीथाखेड़ी जागीर में बैलेसिंग रिजर्वायर में जल का संग्रहण कर 44 हजार 500 हेक्टेयर क्षेत्र में और गांधी सागर बांध में जल उद्वहन कर काकासाहेब गाडगिल में जल प्रवाहित करते हुए 15 हजार 500 हेक्टेयर क्षेत्र में इस प्रकार कुल 60 हजार हैक्टेयर में सिंचाई की जाएगी। परियोजना में 133.22 हैक्टेयर निजी भूमि, 42.50 हैक्टेयर वन एवं 630.28 हैक्टेयर शासकीय भूमि प्रभावित होगी। मंत्री श्री सिलावट ने बताया कि परियोजना के तहत बैराज, इंटेकवेल, पंप हाउस, राजिंग मैन, पाईप नेटवर्क, वितरण प्रणाली एवं स्काडा कार्य प्रस्तावित है।

इलेक्शन कमीशन अल्बानिया ने दिया आमंत्रण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।आयुक्त राज्य निर्वाचन आयोग श्री मनोज श्रीवास्तव ने जानकारी दी है कि मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग को अल्बानिया रिपब्लिक के संसदीय चुनाव में ऑब्जर्वर के रूप में आमंत्रित किया गया है। अल्बानिया में 9 से 11 मई 2025 तक संसदीय निर्वाचन होना है। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग श्री अभिषेक सिंह ने बताया है कि राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा स्थानीय निर्वाचन में किये गये विभिन्न नवाचारों जैसे पेपरलेस बूथ आदि के सफल प्रयोग के कारण अल्बानिया के निर्वाचन आयोग ने राज्य निर्वाचन आयोग को प्रेक्षक के रूप में आमंत्रित किया है। उन्होंने बताया है कि यह पहला राज्य निर्वाचन आयोग है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्वाचक प्रेक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया है। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नॉलेज शेयरिंग प्लेटफार्म उपलब्ध होगा। राज्य निर्वाचन आयोग अल्बानिया के निर्वाचन संबंधी बेस्ट प्रेक्टिसेज और नवाचारों को सीखेगा। साथ ही प्रदेश के आगामी स्थानीय निकायों के निर्वाचन में इनका उपयोग करने पर विचार करेगा। उन्होंने बताया कि यह आमंत्रण राज्य निर्वाचन आयोग के लिये एक गौरव की बात है और साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का एक महत्वपूर्ण कदम है।

म.प्र. में नशा मुक्ति, भिक्षावृति उन्मूलन के लिये प्रयास है जारी- मंत्री कुशवाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देहरादून (उत्तराखण्ड) में दो दिवसीय भिक्षावृति, ट्रांसजेंडर व्यक्ति एवं नशा मुक्ति चिंतन शिविर में शामिल हुए। चिंतन शिविर केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। शिविर में सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय के राज्यमंत्री द्वय श्री रामदास अठावले और श्री बीएल वर्मा तथा प्रदेश की पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वंतत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर सहित देश के अन्य प्रदेशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

जल है तो कल है, हर व्यक्ति प्रति दिन एक घण्टे श्रमदान करें: जल संसाधन मंत्री सिलावट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट ने नर्मदापुरम जिले के केसला विकासखंड के ग्राम पंचायत तीखड में झाड़ बीडा उद्वहन सिंचाई परियोजना के पंप हाउस क्रमांक 2 के अंतर्गत 4 पंपों का भूमि- पूजन किया। ग्राम तीखड में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री श्री सिलावट ने पौध-रोपण कर पर्यावरण बचाने का संदेश भी दिया। झाड़ बीडा सिंचाई परियोजना से 79 गांव के 19 हजार 858 किसान लाभान्वित होंगे। परियोजना की सिंचाई क्षमता 15 हजार 610 हैक्टेयर तक की है, जिसे 177, 58 करोड़ की लागत से निर्मित किया जाएगा। मंत्री श्री सिलावट ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि जल है तो कल है, जल से ही प्रगति है। जल है तो अन्नदाता किसानों का विकास भी है। मंत्री श्री सिलावट ने

कहा जल का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पहले जब हम कहीं जाते थे तब अपने आस-पास तालाब, बावडी, कुंओं एवं नालों को जल से लबालब देखा करते थे। यदि हमने आज जल का संरक्षण एवं संवर्धन नहीं किया तो आने वाली पीढ़ी हमे मांफ नहीं करेगी। विकास और प्रगति की बुनियाद जल है। मंत्री श्री सिलावट ने सभी से आहवान किया कि अपने जीवन का प्रतिदिन एक घण्टा किसी भी तालाब, बावडी, नदी एवं नालों पर श्रम दान कर बिताएं। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि वर्ष 2003 में मध्यप्रदेश में 07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई होती थी। अब शासन ने इसे बढाकर 50 लाख हैक्टेयर कर दिया है। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि आगामी 02 साल में इसे बढाकर 65 लाख हैक्टेयर एवं 05 साल में 1 लाख करोड हैक्टेयर तक कर दिया जाएगा। मंत्री श्री सिलावट ने कहा पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने नदी जोडने का सपना देखा था।

उस सपने को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी पूरा कर रहे है। वर्ष 2047 तक भारत एवं मध्यप्रदेश विकसित राष्ट्र एवं राज्य की श्रेणी में आ जाएगा। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि पहले लोग एक एक बूंद पानी को तरसते थे, लेकिन आज शासन ने सिंचाई सुविधाओं का बहुत विस्तार किया है। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि जहां पर जल होगा पर्यटन भी होगा। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि हरदा एवं नर्मदापुरम जिले के 82 हजार हैक्टेयर के क्षेत्र में तवा नहर से मूंग फसल के लिए पानी दिया जाता है। मंत्री श्री सिलावट ने निर्देश दिए कि जितनी भी कच्ची नहरें है, उन्हें पक्की एवं दुरस्त करने के लिए प्रस्ताव भिजवाएं।

मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब हम जल की एक-एक बूंद बचाएंगे। तालाब, बावड़ियो, कुंओं एवं नालों की सुरक्षा करें। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए 30 मार्च से जल गंगा संवर्धन अभियान प्रारंभ किया गया है। उन्होने अभियान में सभी लोगों को योगदान देने के लिए संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में विधायक श्री प्रेम शंकर वर्मा जनपद पंचायत केसला के अध्यक्ष श्री गंगा राम कलमे, जनपद पंचायत सिवनीमालवा की अध्यक्ष रेणुका मंडलोई सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बडी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे।

सीईएस एनालिटिकल एंड रिसर्च लेबोरेट्री का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण एवं सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य मंत्री श्री पटेल ने भोपाल स्थित सीईएस एनालिटिकल एंड रिसर्च लेबोरेट्री का निरीक्षण किया। यह प्रयोगशाला मध्यप्रदेश खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के अंतर्गत अनुबंधित है, जहाँ खाद्य सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विविध प्रकार के वैज्ञानिक

परीक्षण किए जाते हैं।

राज्य मंत्री श्री पटेल ने प्रयोगशाला की कार्यप्रणाली, परीक्षण प्रक्रियाओं, उपकरणों और गुणवत्ता मानकों की विस्तृत जानकारी ली तथा बेहतर पारदर्शिता, कार्यक्षमता और सटीक परिणाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रयोगशाला में कार्यरत रसायन वैज्ञानिकों एवं विश्लेषकों से संवाद कर राज्य में खाद्य सुरक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और सुधार की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की। राज्य मंत्री श्री पटेल ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रयोगशाला में सभी परीक्षण कार्य निर्धारित समय-सीमा और मानकों के अनुरूप निष्पादित किए जाएं।

50 प्रतिशत से कम रिजल्ट देने वाले प्राचार्य और शिक्षकों को करें स्थानांतरित : मंत्री विजय शाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुँवर विजय शाह ने कहा है कि कम रिजल्ट देने वाले शिक्षकों के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि बच्चों के परीक्षा में प्राप्तांकों का प्रतिशत यदि 50 प्रतिशत से कम रहता है तो ऐसे प्रिंसिपल और ऐसे शिक्षकों को उस विदयालय में रहने का कोई अधिकारी नहीं है उनका स्थानांतरण तुरंत किया जाए। बच्चों के भविष्य के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। मंत्री डॉ. विजय शाह ने कहा कि अधिकारियों को मोटीवेशनल होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि आपको शत प्रतिशत परिणाम चाहिए तो संवेदनशीलता के साथ सकारात्मक सोच भी रखना होगी।मंत्री डॉ. शाह जनजातीय विभाग के दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशासन अकादमी में अधिकारियों के साथ अपने अनुभव साझा कर रहे थे। उन्होंने कहा विभाग एक परिवार की तरह हैं, जिस तरह परिवार में माता-पिता मुखिया होते हैं। आयुक्त श्रीमन शुक्ल ने अपनी कार्य कुशलता और तत्परता से विभाग को एक नई दिशा दी है।

मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि जिले में पदस्थ अधिकारी अपने जिलों में स्थित छात्रावासों में बच्चों के साथ रात्रि-विश्राम करें। आप चाहते हैं कि छात्रावासों की दशा में व्यवस्थाओं में सुधार हो तो आपको 15 दिन में एक रात छात्रावासों में बच्चों के साथ रूकना होगा। जब आप बिस्तर पर सोयेंगे तो बिस्तरों की हालत सुधरेगी। उनके साथ खाना खायें। आपको भी मालूम होना चाहिए कि वे किस प्रकार का भोजन कर रहे हैं। उनके रहने के कमरे, बाथरूम आदि में अपने आप सुधार आएगा। बच्चों के साथ वक्त बितायेंगे तो वे अपने मन की बात आपसे कह सकेंगे। आपके रूकने से अन्य कर्मचारी भी काम के प्रति गंभीर होंगे।मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि स्कूलों में उपस्थति के समय जब टीचर बच्चों का नाम पुकारते हैं तो बच्चे प्रतिउत्तर में यस मैडम या यस सर नहीं कहेंगे। अपना नाम सुनने पर उपस्थिति दर्ज कराने के लिए वे जय हिन्द सर अथवा जय हिन्द मैडम कहेंगे।

प्रदेश में ट्रांसमिशन लाइनों एवं एक्स्ट्रा हाईटेंशन सब स्टेशनों की हो रही है असेट मेपिंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी(एम.पी. ट्रांसको) प्रदेश की अपनी ट्रांसमिशन लाइनों एवं एक्स्ट्रा हाईटेंशन सब स्टेशनों की असेट मेपिंग करवा रहा है। इससे जहां ट्रांसमिशन एलीमेंटस का डिजीटल डाटा एक क्लिक पर उपलब्ध हो सकेगा ,वहीं किसी भी इमरजेंसी के समय मटेरियल मैनेजमेंट टाइम और व्यवधान को न्यूनतम करने में सहायता मिलेगी। एम.पी. ट्रांसको के मुख्य अभियंता श्री आर.के. मिश्रा ने बताया प्रदेश की 27900 कि.मी. लाइनों एवं 416 सब स्टेशनों में यह असेट मेपिंग का कार्य चल रहा है।

इसके लिये सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और डेशबोर्ड के निर्माण का कार्य भी करना है। अलग-अलग मॉडयूल में जानकारी संरक्षित की जा रही है। ट्रांसमिशन कंपनी के लाइन मेंटनेन्स कार्मिकों के साथ सबस्टेशन प्रभारी के मोबाईल पर ऐप से यह पूरी जानकारी उपलब्ध रहेगी। ट्रांसमिशन एलीमेंट्स की मैपिंग सर्वे ऑफ इंडिया के मैप को आधार बनाकर की जा रही है जिससे डेटा की सटीक प्रमाणिकता रहेगी। डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम(डीजीपीएस) के उपयोग से 1 सेंटीमीटर से 1 मीटर तक के स्थान में सटीकता से मैपिंग हो रही है। असेट मैपिंग से ट्रांसमिशन टॉवरों में कोई समस्या आने पर टॉवर की स्थिति के बारे में पूरी जानकारी त्वरित मिल जायेगी। ट्रांसमिशन कंपनी के सभी एलीमेंटस का डिजीटाइजेशन होने से व्यवस्थित रिकार्ड रखने में आसानी रहेगी, साथ ही मोबाईल ऐप पर भी जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। इस मैपिंग में ट्रांसमिशन कंपनी की भूमि का भी रिकार्ड उपलब्ध रहेगा।डेशबोर्ड पर विस्तृत जानकारी एक क्लिक पर उपलब्ध रहेगी।जरूरत के पार्टस, उपकरण आदि के बारे में पूरी जानकारी मिलने से सुधार कार्य और मटेरियल के इंतजामों में लगने वाले समय में कमी आयेगी।

नैचुरल गैस कनेक्शन देने की प्लानिंग कर रोडमेप प्रस्तुत करें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। हितग्राहियों को पाइप्ड नैचुरल गैस कनेक्शन देने की प्लानिंग कर इसका रोडमेप विभाग को शीघ्र प्रस्तुत करें। आयुक्त खाद्य श्री कर्मवीर शर्मा ने यह निर्देश सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क की समीक्षा के दौरान दिये। प्रदेश में शहरी गैस वितरण नेटवर्क विकास एवं विस्तार नीति 2025 जारी की गई है। इन नीति के माध्यम से प्रदेश में जहां घर-घर गैस की पहुंच आसान होगी, वहीं वाहनों में स्वच्छ ईंधन भरने के लिये सीएनजी गैस स्टेशन का विस्तार होगा। नीति लागू होने से स्वच्छ ऊर्जा का विस्तार होने के साथ ही पर्यावरण की रक्षा भी हो सकेगी। इस नीति से प्रदेश में बड़े पैमाने पर अधोसंरचना का निर्माण होगा और रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। शहरी गैस वितरण संस्थाओं के लिये सिंगल विंडो सिस्टम से अनुमति देने का प्रावधान किया गया है।

समीक्षा बैठक में जानकारी दी गई कि प्रदेश में अब तक 3 लाख 17 हजार घरों में पाइप्ड नैचुरल गैस (पीएनजी) कनेक्शन उपलब्ध कराये गये हैं। इसी तरह 368 सीएनजी स्टेशन स्थापित किये गये हैं। आयुक्त खाद्य श्री शर्मा ने इस कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये।

पानी के अविरल बहाव के लिये निरंतर हो रहे हैं जल संरक्षण पर केन्द्रित कार्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में पानी के अविरल बहाव के लिये जन-सहभागिता से जल-स्रोतों के संरक्षण का कार्य निरंतर किया जा रहा है। पानी के अपव्यय को रोकने के लिये जन-सामान्य में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जागरूकता फैलाई जा रही है। देवास में अमृत संचय अभियान की टीम ने छात्राओं को बारिश का पानी सहेजने और बूँद-बूँद पानी बचाने के लिये प्रेरित किया। शहर की चिमनाबाई हायर सेकेण्डरी स्कूल की छात्राओं को बारिश के पानी का महत्व बताया गया। छात्राओं ने शपथ ली कि वे अपने जीवन में पानी के

अपव्यय को रोकने और बारिश के पानी को सहेजने के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभायेंगी। धार जिले की कुक्षी ग्राम पंचायत में भगवान श्री विष्णु मंदिर परिसर की बावड़ी में श्रमदान कर सफाई कार्य किया गया। ग्रामीणों ने पुरातत्व महत्व की जल संरचनाओं के संरक्षण का संकल्प भी लिया। बुरहानपुर में जन-सहभागिता से समाज में जल संरक्षण का संदेश दिया जा रहा है। जिले के बिरोदा ग्राम के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की दीवारों पर प्रमुखता के साथ जल है तो कल है'' का स्लोगन लिखा गया है। इसके साथ ही पेंटिंग के माध्यम से जल के महत्व को दर्शाया गया है। बच्चों को जल संरक्षण का महत्व बताने के लिये बालसभा के आयोजन के साथ रंगोली, चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजन ग्राम सागफाटा की शासकीय शाला में भी किया गया। जनपद पंचायत टोंकखुर्द की ग्राम पंचायत रतनखेड़ी में तालाब गहरीकरण का कार्य किया गया। इसी तरह ग्राम बीसाखेड़ी में भी तालाब गहरीकरण का कार्य किया गया।

जल स्रोतों और नदियों के उद्गम स्थलों का संरक्षण आवश्यक : मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि जलगंगा संवर्धन अभियान में अंतर्गत पारंपरिक जल स्रोतों की पहचान कर उनके पुनर्जीवन के लिए पूर्व प्रयास करें। इस अभियान में मनरेगा योजना और ग्राम पंचायतों की अहम भूमिका है।

उन्होंने कहा कि शहरीकरण की ओर बढ़ती ग्राम पंचायतों के लिए योजनाओं में लचीलापन हो और जमीनी हकीकत के अनुसार नीतियों में बदलाव किया जाए। मंत्री श्री पटेल ने मंगलवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में जिला पंचायत एवं जनपद पंचायतों

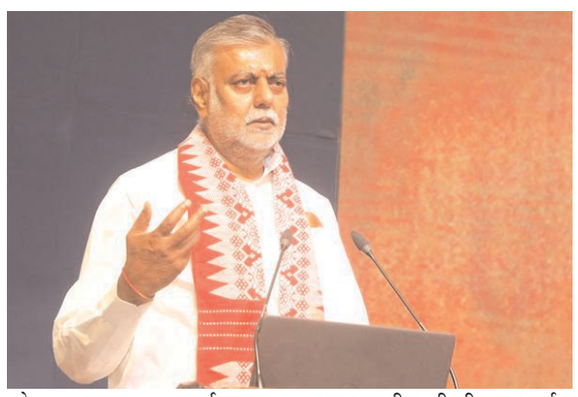

के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों के प्रशिक्षण सह कार्यशाला (ओरियंटेशन कार्यक्रम) को संबोधित किया। इस अवसर पर अपर सचिव श्री दिनेश जैन, सीईओ एसआरएलएम श्रीमती हर्षिका सिंह, सीईओ आरआरडीए श्री दीपक आर्य, आयुक्त मनरेगा श्री अवि प्रसाद सहित जिला पंचायत सीईओ और जनपद पंचायत सीईओ उपस्थित थे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि जल स्रोतों और नदियों के उदगम स्थलों के संरक्षण के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन स्रोतों का संरक्षण आवश्यक। सभी जनपद स्तर के अधिकारी इस दिशा में विशेष कार्य करें। उन्होंने बताया कि नरसिंहपुर जिले में मां नर्मदा के तटों की सफाई के लिए अभियान चलाकर कार्य किया जा रहा है। इसी प्रकार जिला स्तर पर उन्होंने नदियों से तटों की सफाई के लिए विशेष प्रयास करें। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण के भौगोलिक चुनौतियां का अध्ययन भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि महानगरों के समीप स्थित ग्राम एवं जनपद पंचायतों को सेमी अर्बन मॉडल पर विकसित किया जाएगा।

म.प्र. पॉवर जनरेशन कंपनी की ताप विद्युत इकाइयों का 14 बार 100 दिनों से अधिक निरंतर संचालन का नया रिकार्ड

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में एक और उपलब्धि अपने नाम की है। पॉवर कंपनी की ताप विद्युत इकाइयों ने सतत् व निर्बाध संचालन में नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए कुल 14 बार 100 दिनों से अधिक तक लगातार विद्युत उत्पादन करने का रिकार्ड कायम किया। उल्लेखनीय है कि वित्तीय वर्ष 2023-24 में इन इकाइयों ने 13 बार 100 से अधिक दिनों तक निरंतर संचालन में रहने का रिकार्ड बनाया था। यह उपलब्धि? मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के ताप विद्युत इकाइयों की क्षमता व संचालन की विश्वसनीयता का प्रतीक है। ताप विद्युत इकाइयों की इस ऐतिहासिक सफलता पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने सभी ताप विद्युत गृह के इंजीनियरों, तकनीशियनों व संचालन टीम को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। उन्होंने कहा कि यह सफलता कंपनी की तकनीकी दक्षता और ऊर्जा क्षेत्र में निरंतर सुधार के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।यह उपलब्धि न केवल राज्य के लिए गर्व की बात है, अपितु यह ऊर्जा उत्पादन की दिशा में आत्मनिर्भरता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम भी है।मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के ताप विद्युत गृह अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई, संजय गांधी ताप विद्युत गृह बिरसिंगपुर, श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना दोंगलिया व सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी की इकाइयों ने निरंतर चलने की इस श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई की 250 मेगावॉट क्षमता की यूनिट नंबर 5 ने लगातार 300 दिनों का आंकड़ा पार कर शानदार प्रदर्शन किया। तीन यूनिट ने बनाया 200 दिनों से अधिक उत्पादन करने का रिकार्ड पॉवर जनरेटिंग कंपनी की तीन इकाइयों ने लगातार 200 से अधिक दिनों तक संचालन का आंकड़ा पार किया।

नागरिकों की खुशहाली और बेहतर जीवन के लिए प्रयासरत है आनंद विभाग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नागरिकों की खुशहाली एवं बेहतर जीवन के लिए आंतरिक तथा बाह्य सकुशलता आवश्यक है। राज्य का पूर्ण विकास नागरिकों की मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक उन्नति तथा प्रसन्नता से ही संभव है। नागरिकों के लिये इस प्रकार वातावरण तैयार करना होगा जो उनके लिए आनंद का कारक बनें। विकास का मापदण्ड भौतिक सुविधाओं पर आधारित होने के साथ-साथ नागरिकों के आनंद के आधार पर भी होना चाहिए। इस उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा आनंद संस्थान का गठन अगस्त 2016 में किया गया था। यह संस्थान, मध्यप्रदेश शासन के आनंद विभाग अन्तर्गत संचालित है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी राज्य आनंद संस्थान श्री आशीष कुमार ने बताया कि अपनी स्थापना के समय से ही राज्य आनंद संस्थान, प्रदेश के नागरिकों की खुशहाली और मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने के लिए सतत कार्यरत है। संस्थान का यह दृढ़ विश्वास है कि सुख बाहरी प्रभाव नहीं, बल्कि एक आंतरिक अनुभूति और एक स्वाभाविक अवस्था है

वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिये खाद्य विभाग की प्रमुख सचिव ने गेंहू उपार्जन तथा हितग्राहियों की ई केवाईसी के निर्देश दिए

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से खाद्य विभाग की प्रमुख सचिव रश्मि अरूण शमी ने अधिकारियों को गेंहू उपार्जन तथा हितग्राहियों की ई केवाईसी के संबंध में निर्देश दिए। प्रमुख सचिव ने कहा कि खाद्य सुरक्षा योजना के सभी हितग्राहियों की ई केवाईसी 30 अप्रैल तक हरहाल में कराएं। इसके लिए ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में लगातार शिविर लगाएं। प्रदेश में लगभग 25 प्रतिशत हितग्राहियों की ई केवाईसी की जानी है। प्रत्येक उचित मूल्य दुकान तथा सहायक आपूर्ति अधिकारी को ई केवाईसी का दैनिक लक्ष्य तय करें। एसडीएम के माध्यम से शिविरों की तिथियाँ निर्धारित कराकर 30 अप्रैल से पहले शत-प्रतिशत ई केवाईसी कराएं। ई केवाईसी की समस्त जानकारी सेल्समैन द्वारा पीओएस मशीन से दर्ज की जा रही है। शीघ्र ही मोबाइल एप के माध्यम से फेस आइडेंटिफिकेशन सभी आधार

संख्या के सत्यापन की सुविधा दी जा रही है। इससे हितग्राही स्वयं ई केवाईसी कर सकेगा। कलेक्टर ई केवाईसी कराने की प्रगति की प्रतिदिन समीक्षा करें।

प्रमुख सचिव ने कहा कि गेंहू उपार्जन के लिए खरीदी केन्द्रों में सभी सुविधाएं उपलब्ध कराएं। पंजीकृत किसानों से रकबे का दो दिवस में शत-प्रतिशत सत्यापन कराएं। स्लॉट बुक करने वाले किसानों को उनकी सुविधा के अनुसार उपार्जन का अवसर दें। खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में बारदाने, किसानों के लिए छाया पानी की व्यवस्था, तौलकांटे, हम्माल तथा गेंहू के सुरक्षित भण्डारण की व्यवस्था कराएं। कई जिलों में किसानों द्वारा स्लॉट बुक करने के बावजूद खरीदी केन्द्रों की तुलना में मण्डियों में गेंहू की अधिक आवक हो रही है। कलेक्टर इस बात को सुनिश्चित करें कि निर्धारित समर्थन मूल्य से कम दाम पर गेंहू न बिके। उपार्जित गेंहू का स्वीकृति पत्र तत्काल जारी कराकर किसानों को तीन दिन में भुगतान कराएं।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में संचालक खाद्य कर्मवीर शर्मा ने कहा कि ई केवाईसी कराने के लिए प्रत्येक ग्रामवार तथा शहरी क्षेत्र में वार्डवार कार्यक्रम बना लें। सभी डीएसओ के पास शेष बचे हितग्राहियों की सूची उपलब्ध है। इसे प्रत्येक सेल्समैन को उपलब्ध कराकर शेष हितग्राहियों की ई केवाईसी कराएं। अभियान के दौरान ही जेएसओ मृत व्यक्तियों, डुप्लीकेट तथा स्थाई रूप से पलायन कर गए व्यक्तियों के नाम एम राशन मित्र पोर्टल से हटाएं। शर्मा ने उपार्जन के संबंध में कहा कि जिला स्तर पर कंट्रोल रूम बनाकर गेंहू उपार्जन की निगरानी करें। सभी खरीदी केन्द्रों का आज ही निर्धारण करा दें। रीवा और शहडोल संभागों में अब उपार्जन में तेजी आएगी। सभी खरीदी केन्द्रों में स्लॉट बुक करने की सुविधा शुरू करा दें। जिस खरीदी केन्द्र में अधिक संख्या में किसानों का पंजीयन है वहाँ अतिरिक्त तौलकांटे की व्यवस्था करें। तौल की सुविधा के अनुसार ही स्लॉट बुक होगा।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि खाद्य सुरक्षा योजना के हितग्राहियों की ई केवाईसी कराने के लिए शिविर तय कर दिए गए हैं। इन शिविरों में पटवारी, ग्राम रोजगार सहायक और ग्राम पंचायत सचिव भी उपस्थित रहेंगे। शेष हितग्राहियों की ई केवाईसी 25 अप्रैल तक हो जाएगी। गेंहू उपार्जन के लिए खरीदी केन्द्रों का निर्धारण कर दिया गया है। सभी खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध हैं। अधिकतर खरीदी केन्द्र गोदाम स्तरीय बनाए गए हैं। खरीदी केन्द्रों से स्लॉट बुकिंग की सुविधा शुरू हो गई है। उपार्जन की निगरानी के लिए जिला और विकासखण्ड स्तर पर दल तैनात कर दिया गया है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी तथा उपार्जन से जुड़े सभी अधिकारी उपस्थित रहे।

सिन्धी भाषा दिवस पर विचार गोष्ठी आज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था भारतीय सिंधू सभा परिवार द्वारा 10 अप्रैल सिन्धी भाषा दिवस पर संस्थाध्यक्ष श्री अशोक चांदवानी जी की अध्यक्षता में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया है। संस्था के महामंत्री विनोद गेलानी ने बताया विचार गोष्ठी का आयोजन सिन्धी कॉलोनी स्थित बाबा मेहरशाह दरबार में प्रातः 9.15 बजे से 10 बजे तक आयोजित किया गया है। संस्था के श्री सतीश सुखेजा विक्रम चौधरी गोपी गेलानी श्रीचंद मनवाणी गोपीचंद कापड़ी फेरूमल तोलवानी विजय जग्यासी मनोहर आरतानी विनोद गेलानी देवेंद्र सत्यवानी इंद्रलाल कापड़ी जेठानन्द वाधवानी पहलाजराय भावनानी भरत कामदार नारायण दास गुलाबी गंगाराम सचदेव केशव मखीजा संजय आहूजा पंकज आहूजा भानु हासवानी घनश्यामदास सोनी घनश्याम मंघरानी गुरमुख पंजवानी महेश रावलानी संदीप तोलवानी मनोज नोतानी संजय नागदेव राजकुमार रोचलानी करतार कामरानी डॉ अशोक दुलानी महेश रावलानी विकास सुखेजा जैकी छाबड़िया मनीष सदानी संजय वाधवानी शंकर सेनानी पहलाज राय चेतवानी अशोक नागदेव राखी होतचंदानी सिमरन होतचंदानी बबीता गंगवानी ने सभी सदस्यो एवं समाज सेवायों व मातृशक्ति से विचार गोष्ठी में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित हुईं सतना की भावना सिंह परिहार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना निवासी भावना सिंह परिहार ने मध्य प्रदेश यंग साइंटिस्ट कांग्रेस के 40वें संस्करण में यंग साइंटिस्ट अवार्ड जीतकर जिले का नाम रोशन किया है। यह सम्मेलन 27 से 29 मार्च 2025 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में आयोजित किया गया था। इस दौरान 250 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें गणितीय विज्ञान श्रेणी में भावना सिंह को प्रथम पुरस्कार मिला। उन्हें पुरस्कार स्वरूप 25 हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान की गई।

भावना वर्तमान में मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (मैनिट), भोपाल में पीएचडी स्कॉलर हैं। उनकी उपलब्धियों की सूची में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल 2023 में प्राप्त युवा वैज्ञानिक पुरस्कार भी शामिल है।

भावना सिंह परिहार के पिता नरेंद्र सिंह परिहार और माता वंदना सिंह परिहार ने बेटी की इस सफलता पर गर्व व्यक्त किया। शुरुआत से ही मेधावी छात्रा रहीं भावना ने अपने मास्टर्स में गोल्ड मेडल हासिल किया था। उन्होंने दसवीं तक की पढ़ाई भारतीय विद्या भवन प्रिज्म स्कूल से की, जहां वे विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। आठवीं कक्षा में, उन्होंने चार अन्य छात्रों के साथ मिलकर इंदौर में आयोजित एक क्विज़ प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल कर अपने स्कूल का नाम रोशन किया था।

भावना की इस उपलब्धि पर सतना और भोपाल के शिक्षाविदों ने उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। वे युवा वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा बनकर उभरी हैं और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की जा रही है।

मैहर जिले में स्पांसरशिप योजना के लिए 605 बच्चे चयनित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। किशोर न्याय अधिनियम 2015 के तहत मिशन वात्सल्य गाइडलाइन के मार्गदर्शी सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में मैहर जिले में देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले चिन्हित पात्र बच्चों को प्रायोजन और पालन पोषण कार्यक्र म से लाभांवित करने 605 बच्चों का चिन्हांकन किया गया है। इन सभी 605 बच्चों को निवारक स्पांसरशिप योजना का पात्रतानुसार लाभ दिया जायेगा। इस आशय की जानकारी मैहर में अपर कलेक्टर एवं अपर जिला दंडाधिकारी शैलेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को संपन्न प्रायोजन एवं पालन पोषण देखरेख अनुमोदन समिति की बैठक में दी गई। इस मौके पर समिति के सचिव जिला बाल संरक्षण अधिकारी राजेन्द्र बांगरे, बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष चन्द्रकिरण श्रीवास्तव, दत्तक ग्रहण एजेंसी के प्रतिनिधि, पिपरा सेवादल बिरादरी संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित थे। समिति की बैठक में जिला कार्यक्र म अधिकारी मैहर राजेन्द्र बांगरे ने बताया कि जिला अंतर्गत देखभाल की आवश्यकता वाले बच्चे जो परिवार या समुदाय में रह रहे हैं और प्रायोजन के मापदण्डों को पूरा करते हैं। उन्हें मिशन वात्सल्य के तहत फास्टर केयर एवं स्पांसरशिप योजना का लाभ दिया जाता है। इन मापदण्डों की पात्रता के अनुसार मैहर जिले में परियोजना अधिकारियों द्वारा कुल 605 बच्चों का चिन्हांकन किया गया है। जिनमें अमरपाटन के 189, मैहर परियोजना एक के 103 और मैहर दो के 175 तथा रामनगर के 138 बच्चे शामिल हैं। प्रायोजन एवं पालन पोषण कार्यक्र म के रि यान्वयन मूल्यांकन और समीक्षा के लिए कलेक्टर की अध्यक्षता में समिति गठित की गई है। इसके पूर्व मैहर जिले में देखभाल की आवश्यकता वाले 104 बच्चों को विभिन्न योजनाओं से लाभांवित किया जा रहा है। जिनमें मुख्यमंत्री बाल आशीर्वाद योजना में 12, मुख्यमंत्री कोविड 19 बाल सेवा में 13, स्पांसरशिप योजना में 75, प्रधानमंत्री केयर फार चिल्ड्रेन योजना में 4 बच्चों को लाभ दिया जा रहा है।

सिंगरौली में दो महिला डांसर से रेप, 2 आरोपी पकड़ाए, तीन दिन पहले छठी-कार्यक्रम का झांसा देकर बुलाया

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले में दो ऑर्केस्ट्रा डांसर के साथ बंधक बनाकर दुष्कर्म का मामला सामने आया है। आरोपियों ने दोनों डांसरों को छठी कार्यक्रम के बहाने कंचनी में बुलाया था। इसके बाद सुनसान फार्म हाउस में ले जाकर दोनों आरोपियों ने पीड़िताओं के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। घटना रविवार रात 11 बजे बैढ़न थाना क्षेत्र के कटनी इलाके में हुई है।

पुलिस ने राम प्रकाश कुशवाहा को छत्तीसगढ़ के बलरामपुर से गिरफ्तार किया गया। दूसरा आरोपी रोहित कुशवाहा उत्तर प्रदेश के शक्तिनगर से बस पकड़कर भागने की कोशिश कर रहा था, जहां से उसे पकड़ा गया। दोनों आरोपी बैढन थाना के कचनी इलाके के रहने वाले हैं। उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। पुलिस ने घटना में प्रयोग की गई बाइक भी जब्त कर ली है। आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है।

आरोपियों पर बंधक बनाकर रेप का आरोप: पीड़िता ने बताया कि रविवार दोपहर को एक अनजान नंबर से फोन आया। कॉलर ने शादी पार्टी में ऑर्केस्ट्रा परफॉर्मेंस के बारे में पूछा। छठी कार्यक्रम का झांसा देकर दोनों डांसरों को विंध्यनगर बुलाया गया। वहां से एक आरोपी बाइक पर उन्हें गांव ले गया। कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के बजाय आरोपी उन्हें एक सुनसान फार्म हाउस में ले गए। वहां दूसरा आरोपी पहले से मौजूद था। दोनों आरोपियों ने पीड़िताओं को बंधक बनाकर रेप किया और फरार हो गए।

विंध्य नगर थाना प्रभारी अर्चना द्विवेदी ने बताया कि बीते 7 अप्रैल को दो महिलाएं विंध्य नगर थाने पहुंची थी। जिन्होंने दो आरोपियों के खिलाफ अपने साथ रेप की शिकायत की थीं।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान अंतर्गत 653 गर्भवती महिलाओं की हुई जांच

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस के निर्देशन में बुधवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं के प्रसव पूर्व जांच का आयोजन जिला अस्पताल के साथ-साथ विकासखण्ड के सिविल अस्पताल एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में आयोजित किया गया।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी ने बताया कि शिविर में 653 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई, जिसमें 123 गर्भवती महिलाओं का चिन्हांकन हाईरिस्क में किया गया। शिविर के दौरान जिला अस्पताल सतना में 55 महिलाओं की जांच में 15 हाईरिस्क, सिविल अस्पताल नागौद में 76 गर्भवती महिलाओं की जांच में 21 हाईरिस्क, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोठी में 37 महिलाओं की जांच में 21 हाईरिस्क, सिविल अस्पताल उचेहरा में 98 महिलाओं में 12 हाईरिस्क, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मझगवां में 42 महिलाओं में 8 हाईरिस्क, सिविल अस्पताल रामपुर बघेलान में 50 महिलाओं में 10 हाईरिस्क, सिविल अस्पताल मैहर में 135 महिलाओं में 16 हाईरिस्क, सिविल अस्पताल अमरपाटन में 52 महिलाओं की जांच में 15 हाईरिस्क तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र देवराजनगर में 108 गर्भवती महिलाओं की जांच में 19 हाईरिस्क की चिन्हित की गई। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत प्रत्येक माह की 9 एवं 25 तारीख को गर्भवती महिलाओं का परीक्षण शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं में कराया जाता है।

समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित आवेदनों का निराकरण करें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा है कि सभी अधिकारी समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का तत्काल निराकरण करें। इस माह प्रस्तावित समाधान ऑनलाइन में स्वास्थ्य विभाग तथा चिकित्सा विभाग की राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन योजना एवं प्रसूति सहायता, गृह विभाग की एफआईआर लिखने में देरी तथा ऊर्जा विभाग की बिजली न आने एवं वोल्टेज संबंधी शिकायतों की समीक्षा की जाएगी। निर्धारित एजेण्डा बिन्दुओं में राजस्व विभाग के खसरा ऑनलाइन अपडेट करने, नामांतरण एवं बंटवारे से संबंधित प्रकरण, ग्रामीण विकास विभाग की प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना एवं ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत तथा जिला पंचायत द्वारा सामग्री क्रय एवं अन्य भुगतानों से जुड़े आवेदनों की समीक्षा की जाएगी। समाधान ऑनलाइन में लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की नलजल योजनाओं से संबंधित आवेदन एवं सभी विभागों के सीएम हेल्पलाइन में सौ दिवस से अधिक समय से लंबित प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की जाएगी। सभी अधिकारी व्यक्तिगत रूचि लेकर सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का निराकरण करें। मार्च माह में दर्ज आवेदनों तथा 50 दिवस से अधिक समय से लंबित आवेदनों का तत्परता से निराकरण करें।

कलेक्टर ने तहसीलदारों एवं नायब तहसीलदारों पर की कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत अविवादित नामांतरण के प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण नहीं करने पर 13 तहसीलदारों तथा नायब तहसीलदारों पर जुर्माने की कार्यवाही की है। इसके साथ ही दो तहसीलदारों को चेतावनी भी जारी की गयी है। कलेक्टर ने समय सीमा में प्रकरणों का निराकरण नहीं करने पर तहसीलदार हुजूर शिवशंकर शुक्ला, साधना सिंह नायब तहसीलदार तहसील मनगवां, वेदवती सिंह नायब तहसीलदार जवा, राजेश तिवारी नायब तहसीलदार सेमरिया तथा राजेश शुक्ला नायब तहसीलदार त्योंथर पर दो-दो हजार रूपये का अर्थदण्ड अधिरोपित किया है। इसी तरह प्रकाश उपाध्याय नायब तहसीलदार त्योंथर, द्वारिका प्रसाद दहायत नायब तहसीलदार त्योंथर, सुमित गुप्ता तहसीलदार मनगवां, राजकुमार टाण्डिया नायब तहसीलदार जवा, विनय मूर्ति शुक्ला तहसीलदार रायपुर कर्चुलियान, रमाकांत तिवारी नायब तहसीलदार सिरमौर, मनोज शुक्ला नायब तहसीलदार हुजूर एवं राजीव शुक्ला नायब तहसीलदार मनगवां पर एक-एक हजार रूपये का जुर्माना लगाया है। कलेक्टर ने नीलेश सिंह धुर्वे तहसीलदार त्योंथर तथा अर्जुन वेलवंशी तहसीलदार सेमरिया को लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत अविवादित नामांतरण के प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण न करने पर चेतावनी जारी की है।

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह ने जिला पंचायत सीईओ समेत जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल को पत्र लिखकर सरभंगा अभ्यारण पर सहमति को लेकर विशेष बैठक बुलाये जाने की मांग की।

स्ट्रीट फूड विक्रेताओं के लिए सुरक्षित और स्वच्छ भोजन पर जागरूकता अभियान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता सुनिश्चित करने की दिशा में एक सक्रि य कदम उठाते हुए मैहर के जिला खाद्य सुरक्षा विभाग ने बुधवार को शहर भर के स्ट्रीट फूड विक्र ेताओं को लक्षित करते हुए एक व्यापक जागरूकता अभियान चलाया। यह पहल राज्य सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अंतर्गत कलेक्टर मैहर रानी बाटड के मार्गदर्शन में की गई है। जिसमें स्थानीय विक्र ेताओं के बीच खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता प्रथाओं के मानकों को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इस दौरान दिन भर चले इस अभियान में खाद्य सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने मैहर के विभिन्न प्रमुख स्थानों, जिनमें व्यस्त बाजार क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थानों के पास और लोकप्रिय सार्वजनिक स्थान शामिल हैं, पर सीधे स्ट्रीट फूड विक्र ेताओं के साथ बातचीत की। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विक्र ेताओं को सुरक्षित खाद्य संचालन, तैयारी और भंडारण के महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में शिक्षित करना था।

जागरूकता सत्रों के दौरान जिन प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित किया गया उनमें शामिल हैं। व्यक्तिगत स्वच्छता: हाथ धोने, साफएप्रन और हेड कवर पहनने और समग्र स्वच्छता बनाए रखने के महत्व पर जोर देना। सामग्री का सुरक्षित स्रोत विक्र ेताओं को विश्वसनीय स्रोतों से कच्चा माल खरीदने और उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के बारे में शिक्षित करना। उचित खाना पकाने और संचालन तकनीक सुरक्षित खाना पकाने के तापमान का प्रदर्शन करना और कच्चे और पके हुए भोजन के बीच र ॉस-संदूषण को रोकना। अपशिष्ट निपटान प्रबंधन स्वच्छ वातावरण बनाए रखने और कीटों के प्रजनन को रोकने के लिए खाद्य अपशिष्ट के उचित निपटान की आवश्यकता पर प्रकाश डालना। स्टॉल और उपकरणों की स्वच्छता अपने वेंडिंग कार्ट, बर्तन और परोसने के बर्तनों को नियमित रूप से साफ और सैनिटाइज करने के महत्व पर जोर देना।

स्वीकृत आवासों की प्रथम किश्त तत्काल जारी करें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण तथा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के संपर्कता सर्वे की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि आवास प्लस योजना के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत की प्रत्येक बसाहट में सर्वे करें। हर पात्र व्यक्ति का नाम सर्वे सूची में अनिवार्य रूप से शामिल करें। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की बस्तियों पर विशेष ध्यान दें। जिन बस्तियों में बसोर परिवारों की बहुलता है वहाँ भी विशेष ध्यान दें। कोई भी पात्र हितग्राही जमीन के अभाव में आवास से वंचित नहीं होना चाहिए। स्वीकृत प्रधानमंत्री आवासों में प्रथम किश्त तत्काल जारी करें। इसी तरह दूसरी किश्त और तीसरी किश्त भी समय पर जारी करके स्वीकृत आवासों को पूरा कराएं। पूर्ण आवासों का विवरण पोर्टल में दर्ज कराकर पूर्णता प्रमाण पत्र जारी करें। पोर्टल में हितग्राहियों को राशि जारी करने में यदि किसी तरह की कठिनाई है तो वरिष्ठ कार्यालयों को अवगत कराएं। उपयंत्रियों के माध्यम से निर्माणाधीन

आवासों की मॉनीटरिंग करें।

कलेक्टर ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से एक सौ जनसंख्या तक की बसाहटों में सड़क संपर्क की सुविधा के लिए किए जा रहे सर्वे के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि संपर्कता एप के माध्यम से प्रत्येक बसाहट का सर्वे सुनिश्चित करें। इसमें चिन्हित 2270 बसाहटों का विवरण दर्ज कराएं। सड़क निर्माण के संबंध में विभिन्न जनप्रतिनिधियों से मिले प्रस्तावों और सुझावों को भी इसमें शामिल करें। सर्वे से कोई भी क्षेत्र वंचित न रहे। बैठक में बताया गया कि संपर्कता सर्वे में जिले की सभी 564 ग्राम पंचायतों में कार्य पूरा हो गया है। सर्वे की 99 प्रतिशत जानकारी दर्ज कर दी गई है। आवास प्लस योजना में वर्ष 2024-25 में 23621 आवासों का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इनमें से 21673 आवास स्वीकृत कर दिए गए हैं। इनमें से 16353 हितग्राहियों को प्रथम किश्त की राशि जारी कर दी गई है। शेष हितग्राहियों की एफटीओ की कार्यवाही करके राशि जारी की जा रही है। अब तक 762 आवासों का निर्माण पूरा हो गया है। बैठक में सभी संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

वृंदावन धाम के संत ऋतेश्वर महाराज जी पहुंचे चाकघाट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। श्री आनंद धामपीठ वृंदावन के पीठाधीश्वर सदगुरु ऋतेश्वर महाराज पहुंचे चाकघाट चाकघाट मंत्री चौराहे पर पूर्व मंत्री स्व. रमाकांत तिवारी के सुपुत्र वरिष्ठ भाजपा नेता कौशलेश तिवारी उर्फ तिवारीलाल ने सैकड़ों लोगों के साथ स्वागत वंदन किया गया वही श्री तिवारी जी के निज निवास चाकघाट पहुंचकर सपरिवार को आशीर्वाद प्रदान किया गया इन दिनों महाराज जी पूरे भारत में भ्रमण कर सनातन का प्रचार कर रहे हैं इसी क्रम में रीवा पहुंचे थे और चाकघाट होते हुए प्रयागराज की तरफ रवाना हुए वही इस दौरान सरोज तिवारी,सुमन तिवारी ने महाराज जी की आरती उतारी वही मनभाकर तिवारी, वेद द्विवेदी,दीपक द्विवेदी,सचिन तिवारी, शिवम तिवारी, मनोज मिश्रा,अलख केशवानी , अनिकेत मिश्रा, शगुन केशवानी, मुन्ना लाल, सहित सैकड़ों की संख्या में महाराज श्री ऋतेश्वर महाराज जी के भक्त मौजूद रहे।

विचार

युवाओं को कौशल प्रशिक्षण से रोजगार और अर्थव्यवस्था को गति देने में जुटी योगी सरकार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दूरदर्शी नेतृत्व में राज्य कौशल विकास मिशन ने प्रदेश के युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खोल दिए हैं। प्रदेश में उभरते क्षेत्रों जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया, मनोरंजन, और नागरिक उड्डयन में रोजगार की अपार संभावनाओं को देखते हुए सरकार ने इन सेक्टर्स में विशेष कौशल प्रशिक्षण योजनाओं की शुरुआत की है। इसके साथ ही, जेवर एयरपोर्ट और फिल्मसिटी जैसे मेगा प्रोजेक्ट्स में रोजगार के अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए संबंधित सेक्टर स्किल काउंसिल्स के माध्यम से युवाओं के प्रशिक्षण की कार्यवाही पूरी भी कर ली गई है। सीएम योगी की यह दूरदर्शी कदम युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और राज्य की आर्थिक प्रगति को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन ने युवाओं के लिए एक नई क्रांति की शुरुआत की है। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तहत इलेक्ट्रॉनिक्स, मीडिया और मनोरंजन जैसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में युवाओं के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इन क्षेत्रों में मांग के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान कर सरकार युवाओं को 'रेडी टू वर्क' बनाने की दिशा में काम कर रही है। इसके अलावा, नागरिक उड्डयन क्षेत्र में भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जो प्रदेश में एयरपोर्ट के विकास के साथ रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दूरदर्शिता से जेवर एयरपोर्ट और फिल्मसिटी प्रोजेक्ट्स राज्य के विकास का आधार बन रहे हैं। इन परियोजनाओं के लिए सेक्टर स्किल काउंसिल्स ने संभावित रोजगार क्षेत्रों की पहचान कर ली है, और अब प्रशिक्षित युवा इनके क्रियान्वयन के लिए तैयार किए जा रहे हैं। जेवर एयरपोर्ट से एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिलने की उम्मीद है, जबकि फिल्मसिटी नोएडा में मनोरंजन उद्योग को बढ़ावा देगी, जिससे मीडिया और प्रोडक्शन से जुड़े युवाओं को फायदा होगा। जेवर एयरपोर्ट और फिल्मसिटी से जुड़े प्रशिक्षण से युवा तकनीकी और रचनात्मक क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाएंगे। यह कदम राज्य की जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि करेगा और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में पलायन को कम करेगा। युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मिल रहा रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तहत 14 से 35 वर्ष की आयु के युवाओं को मुफ्त और रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। योगी सरकार का लक्ष्य हर युवा को उसके कौशल के आधार पर रोजगार देना है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ युद्ध का नहीं होगा अधिक प्रभाव

दिनांक 2 अप्रैल 2025 को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रप द्वारा, विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयातित उत्पादों पर की गई टैरिफ सबंधी घोषणा के साथ ही अंततः अमेरिका द्वारा पूरे विश्व में टैरिफ के माध्यम से व्यापार युद्ध छेड़ दिया गया है। अभी, अमेरिका ने विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयात पर विभिन्न दरों पर टैरिफ लगाया है। अब इनमें से कई देश अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ लगाने की घोषणा कर रहे हैं, जैसे चीन ने अमेरिका से चीन में आयात होने वाले उत्पादों पर दिनांक 10 अप्रैल 2025 से 34 प्रतिशत की दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है। टैरिफ के माध्यम से छेड़े गए व्यापार युद्ध का भारत पर कोई बहुत अधिक विपरीत प्रभाव पड़ने की सभावना कम ही है। दरअसल, अमेरिका ने विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर अलग अलग दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है और साथ ही कुछ उत्पादों के आयात पर फिलहाल टैरिफ की नई दरें लागू नहीं की गई हैं। टैरिफ की यह दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू होंगी।

विभिन्न देशों से अमेरिका में आयात होने वाले उत्पादों पर 10 प्रतिशत की दर से न्यूनतम टैरिफ लगाया गया है। साथ ही, कुछ अन्य देशों यथा चीन से आयातित उत्पादों पर 34 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। इसी प्रकार, वियतनाम से आयातित उत्पादों पर 46 प्रतिशत, ताईवान पर 32 प्रतिशत, थाईलैंड पर 36 प्रतिशत, भारत पर 26 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया पर 25 प्रतिशत, इंडोनेशिया पर 32 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड पर 31 प्रतिशत, मलेशिया पर 24 प्रतिशत, कम्बोडिया पर 49 प्रतिशत, दक्षिणी अफ्रीका पर 30 प्रतिशत, बांग्लादेश पर 37 प्रतिशत, पाकिस्तान पर 29 प्रतिशत, श्रीलंका पर 44 प्रतिशत और इसी प्रकार अन्य देशों से आयातित वस्तुओं पर भी अलग अलग दरों से टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। कुछ उत्पादों जैसे, स्टील, एल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, एनर्जी, बुलीयन एवं अन्य महत्वपूर्ण मिनरल्स को अमेरिका में आयात पर टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। अमेरिका का मानना है कि वैश्विक स्तर पर अन्य देश अमेरिका में उत्पादित वस्तुओं के आयात पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाते हैं, जबकि अमेरिका में इन देशों से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर अमेरिका द्वारा बहुत कम दर पर टैरिफ लगाया जाता है अथवा बिलकुल नहीं लगाया जाता है। जिससे, अमेरिका से इन देशों को निर्यात कम हो रहे हैं एवं इन देशों से अमेरिका में आयात लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार, अमेरिका का व्यापार घाटा असहनीय स्तर पर पहुंच गया है। इसके साथ साथ, अमेरिका में विनिर्माण इकाईयां बंद होकर अन्य देशों में स्थापित हो गई हैं और इससे अमेरिका में रोजगार के नए अवसर भी निर्मित नहीं हो पा रहे हैं। अब ट्रम्प प्रशासन ने अमेरिका को पुनः विनिर्माण इकाईयों का हब बनाने के उद्देश्य से अमेरिका को पुनः महान बनाने का आह्वान किया है और इसी संदर्भ में विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाने का निर्णय लिया गया है ताकि अमेरिका में आयातित उत्पाद महंगे हों और अमेरिकी नागरिक अमेरिका में ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने की ओर प्रेरित हों।

वर्तमान में बढ़े हुए टैरिफ का बोझ अमेरिकी नागरिकों को उठाना पड़ेगा और उन्हें अमेरिका में महंगे उत्पाद खरीदने होंगे, क्योंकि नई विनिर्माण इकाईयों की स्थापना में तो वक्त लग सकता है, विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन तुरंत तो बढ़ाया नहीं जा सकता अतः जब तक नई विनिर्माण इकाईयों की अमेरिका में स्थापना हो एवं इन विनिर्माण इकाईयों में उत्पादन शुरू हो तब तक अमेरिकी नागरिकों को महंगे उत्पाद खरीदने हेतु बाध्य होना पड़ेगा। इससे अमेरिका में एक बार पुनः मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो सकती है एवं ब्याज दरों के कम होने के चक्र में भी देरी होगी, बहुत सम्भव है कि मुद्रा स्फीति को कम करने की दृष्टि से एक बार पुनः कहीं ब्याज दरों के बढ़ने का चक्र प्रारम्भ न हो जाए।

लम्बे समय में जब अमेरिका में विनिर्माण इकाईयों की स्थापना हो जाएगी एवं इन इकाईयों में उत्पादन प्रारम्भ हो जाएगा तब जाकर कहीं मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाया जा सकेगा। विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर टैरिफ सम्बंधी घोषणा के साथ ही, डॉलर पर दबाव पड़ना शुरू भी हो चुका है एवं अमेरिकी डॉलर इंडेक्स घटकर 102 के स्तर पर नीचे आ गया है जो कुछ समय पूर्व तक लगभग 106 के स्तर पर आ गया था। इसी प्रकार अमेरिका में सरकारी प्रतिभूतियों की 10 वर्ष की बांड यील्ड पर भी दबाव दिखाई दे रही है और यह घटकर 4.08 के स्तर पर नीचे आ गई है, यह कुछ समय पूर्व तक 4.70 के स्तर से भी ऊपर निकल गई थी। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़नी प्रारम्भ हो गई है एवं यह पिछले चार माह के उच्चतम स्तर, लगभग 85 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर, पर आ गई है। ट्रम्प प्रशासन के टैरिफ सम्बंधी लिए गए निर्णयों का अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर लम्बी अवधि में तो हो सकता है परंतु छोटी अवधि में तो निश्चित ही यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था को विपरीत रूप से प्रभावित करते हुए दिखाई दे रहा है। अमेरिकी पूंजी बाजार (शेयर बाजार) केवल दो दिनों में ही लगभग 10 प्रतिशत तक नीचे गिर गया है और अमेरिकी निवेशकों को लगभग 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ है। इतनी भारी गिरावट तो वर्ष 2020 में कोविड महामारी के दौरान ही देखने को मिली थी। यदि यही स्थिति बनी रही तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था कहीं मंदी की चपेट में न आ जाय। यदि ऐसा होता है तो पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी। अतः ट्रम्प प्रशासन का टैरिफ सम्बंधी उक्त निर्णय अति जोखिम भरा ही कहा जाएगा।

जब पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी तो भारत की अर्थव्यवस्था पर भी कुछ तो विपरीत असर होगा ही।

इस संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि बहुत सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत से आयातित वस्तुओं पर लगाए गए 26 प्रतिशत के टैरिफ का भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक विपरीत प्रभाव नहीं हो। क्योंकि, एक तो भारत से अमेरिका को निर्यात बहुत अधिक नहीं है। यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र लगभग 3-4 प्रतिशत ही है। वैसे भी भारतीय अर्थव्यवस्था निर्यात पर निर्भर नहीं है एवं यह विभिन्न उत्पादों की आंतरिक मांग पर अधिक निर्भर है। भारत से सकल घरेलू उत्पाद का केवल लगभग 16 प्रतिशत (वस्तुएं एवं सेवा क्षेत्र मिलाकर) ही निर्यात किया जाता है। दूसरे, भारत से अमेरिका को निर्यात किए जाने कुछ उत्पादों को उक्त टैरिफ व्यवस्था से फिलहाल मुक्त रखा गया है, जैसे फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, स्टील, अल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, बुलीयन, एनर्जी आदि। संभवतः इन उत्पादों के भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर कुछ भी असर नहीं होने जा रहा है। तीसरे, भारतीय कम्पनियों (26 प्रतिशत टैरिफ) को रेडीमेड गर्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात में पड़ौसी देशों, यथा, बांग्लादेश (37 प्रतिशत टैरिफ), पाकिस्तान (29 प्रतिशत टैरिफ), श्रीलंका (44 प्रतिशत टैरिफ), वियतनाम (46 प्रतिशत टैरिफ), चीन (34 प्रतिशत टैरिफ), इंडोनेशिया (32 प्रतिशत टैरिफ), आदि के साथ अत्यधिक स्पर्धा का सामना करना पड़ता है। परंतु, उक्त समस्त देशों से अमेरिका को होने वाले रेडीमेड गार्मेंट्स के निर्यात पर भारत की तुलना में अधिक टैरिफ लगाए जाने की घोषणा की गई है। अतः इन देशों से रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात भारत की तुलना में महंगे हो जाएंगे, इससे रेडीमेड गार्मेंट्स के क्षेत्र में भारत के लिए लाभ की स्थिति निर्मित होती हुई दिखाई दे रही है। इसी प्रकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कृषि उत्पादों के निर्यात भी भारत से अमेरिका को बढ़ सकते हैं। यदि किन्ही क्षेत्रों में भारत को नुक्सान होता हुआ दिखाई भी देता है तो भारत के विश्व के अन्य देशों के साथ बहुत अच्छे राजनैतिक संबंधो के चलते भारत को अपने उत्पादों के लिए नए बाजार तलाशने में किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। वैसे भी, अमेरिका सहित भारत के यूरोपीयन देशों, ब्रिटेन एवं खाड़ी के देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौतों को सम्पन्न करने हेतु वार्ताएं लगभग अंतिम दौर में पहुंच गईं हैं, इसका लाभ भी भारत को होने जा रहा है।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शीघ्र ही मोनेटरी पॉलिसी के माध्यम से रेपो दरों में परिवर्तन की घोषणा की जाने वाली है। भारत में चूंकि मुद्रा स्फीति की दर लगातार गिरती हुई दिखाई दे रही है अतः भारत में रेपो दर में 75 से 100 आधार बिंदुओं की कमी की घोषणा की जा सकती है। यदि ऐसा होता है तो विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत में कुछ कमी सम्भव होगी, जिसके चलते भारत में निर्मित उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

अगड़ी जातियों के खिलाफ राहुल गांधी का हल्ला बोल, कांग्रेस को किस रास्ते पर ले जायेगा?

बिहार में इसी वर्ष अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा का चुनाव होना है। तमाम राजनीतिक दल इस विधानसभा चुनाव को लेकर अभी से तैयारियों में जुट गए हैं। एक तरफ जेडीयू के मुखिया नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन है, जिसमें विधायकों की संख्या के आधार पर बीजेपी नंबर वन की भूमिका में है। वहीं दूसरी तरफ आरजेडी के नेतृत्व में विपक्षी महागठबंधन है,जिसमें कांग्रेस दूसरे नंबर की बड़ी पार्टी है। हालांकि यह भी एक तथ्य है कि कांग्रेस के नेता विपक्षी गठबंधन के लिए महागठबंधन शब्द की बजाय इंडिया गठबंधन का ही प्रयोग करने लगे हैं।

कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी अपनी पार्टी के जनाधार को लगातार बढ़ाने के लिए बिहार का दौरा कर रहे हैं। वर्ष 2025 में ही राहुल गांधी अब तक तीन बार बिहार जा चुके हैं। अपने मिशन बिहार के तहत राहुल गांधी सोमवार (7 अप्रैल) को बिहार की धरती पर थे। पिछले कुछ महीनों के दौरान उनकी यात्राओं की बात करें तो यह राहुल गांधी का तीसरा बिहार दौरा था। इससे पहले राहुल गांधी 18 जनवरी और 4 फरवरी को बिहार के दौरे पर गए थे।

लेकिन अपने बिहार दौरे के दौरान, राहुल गांधी ने सोमवार को जिस अंदाज में अपर कास्ट यानी अगड़ी जातियों पर हमला बोला,वो सबके लिए काफी चौंकाने वाला रहा। राहुल गांधी ने कहा कि, इस देश में अगर आप अपर कास्ट के नहीं हैं, तो आप सेकंड क्लास सिटिजन हैं। ये बात मैं यूंही नहीं कह रहा। यह बात इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मैंने सिस्टम को बहुत गहराई से देखा और समझा है। हमने तेलंगाना में जातिगत जनगणना की और उसके परिणामों को देखते हुए तेलंगाना में आरक्षण बढ़ा दिया। मैंने खुद नरेंद्र मोदी के सामने कहा है कि अगर आपकी सरकार आरक्षण की दीवार नहीं खत्म करेगी तो हम आरक्षण में 50 प्रतिशत की सीमा वाली दीवार तोड़ देंगे।

राहुल गांधी यहीं नहीं थमे। उन्होंने अगड़ी जातियों के खिलाफ बाकायदा एक माहौल बनाने की कोशिश करते हुए आगे कहा, हमने कांग्रेस के जिला अध्यक्ष चुनें और ये बहुत जरूरी कदम है। पहले हमारे जिला अध्यक्षों में अपर कास्ट के लोग थे, लेकिन अब नई लिस्ट में दो तिहाई लोग- ईबीसी, ओबीसी, दलित, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग से हैं। मैंने और खरगे जी ने बिहार की टीम को साफ संदेश दे दिया है कि आपका काम- बिहार की गरीब जनता का प्रतिनिधित्व करना है। दलितों, ईबीसी, ओबीसी, गरीब सामान्य वर्ग और महिलाओं को जगह देना है।

बिहार का यह दुर्भाग्य रहा है कि वहां के नेताओं ने बिहार को जातियों के आधार पर खंड-खंड बांटने का काम किया है। रही-सही कसर नीतीश कुमार ने ओबीसी में से ईबीसी और दलितों में से महादलितों को निकाल कर पूरी कर दी है। ऐसे में राहुल गांधी कांग्रेस के

कार्यकर्ताओं का जोश बढ़ाने और कांग्रेस के जनाधार को मजबूत बनाने के लिए ओबीसी, ईबीसी, दलित, महादलित और महिलाओं की बात करें, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

लेकिन कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय और सबसे पुरानी पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और वर्तमान में भी पार्टी आलाकमान की भूमिका निभा रहे राहुल गांधी से अगड़ी जातियों को लेकर इस तरह की भाषा की उम्मीद तो कतई नहीं की जा सकती है। जबकि कांग्रेस और खासतौर से गांधी परिवार ने बीडीएम अर्थात बी से ब्राह्मण (इसमें तमाम अगड़ी जातियों को जोड़ा जाता है), डी से दलित और एम से मुस्लिम फॉर्मूले के आधार पर दशकों तक देश पर राज किया है। बिहार में भी इसी फॉमूले के आधार पर दशकों तक कांग्रेस की सरकारें बनती रही हैं।

यह भी एक सर्वविदित तथ्य है कि दलित और ओबीसी मतदाताओं को एक साथ नहीं साधा जा सकता। उत्तर प्रदेश में मायावती की पार्टी बीएसपी के साथ गठबंधन करने के बावजूद यूपी के दलितों ने अखिलेश यादव के उम्मीदवारों को वोट नहीं दिया था। बिहार में भी लालू यादव अपनी ही पार्टी के दिग्गज दलित नेता और बिहार के दूसरे दलित मुख्यमंत्री रहे रामसुंदर दास को जनता दल विधायक दल की बैठक में हरा कर ही 1990 में पहली बार राज्य में मुख्यमंत्री बने थे। ऐसे में राहुल गांधी जिस अंदाज में एक ही साथ पिछड़ों और दलितों को साधने की कोशिश कर रहे हैं, उसका असफल होना तय माना जा रहा है। राहुल गांधी को शायद यह पता नहीं है या हो सकता है कि उन्हें अब तक उनके करीबी लोगों ने यह नहीं बताया है कि बीजेपी समेत बिहार में चुनाव लड़ रहे तमाम राजनीतिक दलों ने ओबीसी, ईबीसी, दलित और महादलित को जातियों के हिसाब से बांट कर, उस पर अपना कब्जा जमा लिया है। ऐसे में कांग्रेस के लिए वहां बहुत ही कम स्कोप बचता है। कांग्रेस को यह भी याद रखना चाहिए कि अगड़ी जातियों के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल कर, राजनीति का सफर शुरू करने वाली मायावती भी पूर्ण बहुमत हासिल कर अपने दम पर उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य की मुख्यमंत्री तभी बन पाई थी, जब उन्होंने अगड़ी जातियों को भी बसपा के साथ जोड़ा था। बिहार में दलित प्रदेश अध्यक्ष बनाकर राहुल गांधी ने पहले ही बड़ा दांव खेल दिया है। ऐसे में अगर वह गांधी परिवार के पुराने विनिंग फॉर्मूले पर अमल करते हुए अगड़ी जातियों को लुभाने की कोशिश करते तो कांग्रेस का संगठन और ज्यादा मजबूत होता नजर आता।

बिहार में वर्ष 2022 में कराए गए जाति सर्वे में आए आंकड़ों के मुताबिक, राज्य में सवर्ण वर्ग की कुल आबादी 2 करोड़ से भी ज्यादा यानी 15.52 प्रतिशत है। वहीं दलितों की कुल आबादी 19.65 प्रतिशत यानी 2.56 करोड़ है। अगर राहुल गांधी कांग्रेस उम्मीदवारों के पक्ष में अगड़ी जातियों और दलितों की बड़ी आबादी को लुभाने में कामयाब हो जाते हैं तो बीजेपी को हराने के नाम पर मुसलमान भी कांग्रेस के साथ खड़े हो जाएंगे। बता दें कि, बिहार में मुसलमानों की कुल आबादी 17.7 प्रतिशत है। ऐसे में राहुल गांधी फिर से बीडीएम फॉर्मूले के तहत कांग्रेस के लिए मजबूत वोट बैंक बनाने की शुरुआत कर सकते हैं।

बीएड कॉलेज में श्रमिकों के बच्चों के लिए नि:शुल्क कोचिंग योजना पर जागरूकता सेमिनार का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी/ (निप्र)। डॉ. आर.एन.एस. बी.एड. कॉलेज, मनेंद्रगढ़ में श्रम विभाग द्वारा मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिकों के बच्चों हेतु निःशुल्क कोचिंग सहायता योजना के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कॉलेज के डायरेक्टर, प्रिंसिपल, शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। इस योजना का उद्देश्य श्रमिक वर्ग के बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहयोग प्रदान कर उन्हें मुख्यधारा में लाना है।

योजना के तहत वे अभ्यर्थी पात्र हैं, जिनके अभिभावक मण्डल में एक वर्ष से पंजीकृत श्रमिक हैं और वे स्वयं अथवा उनकी प्रथम दो संतान इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं, बशर्ते कि वे संबंधित प्रतियोगी परीक्षा के लिए निर्धारित न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता रखते हों। आवेदन की प्रक्रिया को भी सरल और सुलभ बनाया गया है। आवेदक स्वयं, किसी चॉइस सेंटर या श्रम कार्यालय के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। आवेदन के लिए जीवित पंजीयन प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, शैक्षणिक योग्यता से संबंधित दस्तावेज तथा स्व घोषणा प्रमाण पत्र की आवश्यकता होगी। इस योजना के तहत लाभार्थियों को CGPSC, CGVYAPAM, SSC, बैंकिंग, रेलवे तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु निःशुल्क कोचिंग प्रदान की जाएगी। यह कोचिंग ऑनलाइन माध्यम से लाइव क्लास और रिकॉर्डेड वीडियो क्लास के रूप में उपलब्ध कराई जाएगी, साथ ही अध्ययन सामग्री भी दी जाएगी। श्रम विभाग का ध्येय वाक्य "श्रमिक का बच्चा, श्रमिक नहीं रहेगा" इस योजना के माध्यम से साकार होता नजर आ रहा है, जो निश्चित रूप से समाज के वंचित वर्ग के लिए एक प्रेरणा स्रोत है।

कोरबा में बारातियों से भरी कार पलटी, 6 लोग घायल

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरबा में बुधवार की दोपहर शादी से लौट रही कार दुर्घटना का शिकार हो गई। कार सड़क किनारे बिजली खंभे को ठोकर मारते खेत में पलट गई। देखते ही देखते राहगीरों की भीड़ जमा हो गई और कार में घायल लोगों को किसी तरह बाहर निकाला गया। कार में लगभग 6 से ज्यादा लोग सवार थे। कार में दुल्हन की बहन भी थी। जिसकी हालत गंभीर बताई जा रही है। उरगा थाना क्षेत्र के ग्राम पकरिया गांव के पास यह घटना हुई है। कोरबा जिले के बंधवाभांटा निवासी राजेश कुमार रजक की बारात मंगलवार की शाम रायगढ़ जिले के ग्राम जोगड़ा गई हुई थी। बुधवार की दोपहर बंधवाभांटा वापस लौटते समय ये हादसा हुआ। बताया जा रहा है, कि कार का चालक शराब के नशे में था। जिसके चलते यह हादसा हुआ है। घटना की सूचना उरगा थाना पुलिस को दी गई। जहां पुलिस ने मौके पर पहुंच घटनाक्रम की जानकारी ली और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

घर पर में मिली पति-पत्नी की लाश

खून से लथपथ पड़ी थी महिला, फंदे पर झूलते मिला पति, हत्या के बाद सुसाइड की आशंका

ऑडीटर ऑडीटर
Mediaauditor.in

बिलासपुर छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पति और पत्नी की घर पर लाश मिली है। महिला का शव खून से लथपथ पड़ा था। जबकि, पति फंदे पर झूलते मिला। पुलिस को शक है कि, पति ने पहले पत्नी की हत्या की होगी, फिर फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया होगा। घटना कोटा थाना इलाके के बेलगहना चौकी क्षेत्र की है। जानकारी के मुताबिक, ग्राम उमरिया निवासी सुखसिंह बैगा (55) रोजी-मजदूरी करता था। वो अपनी पत्नी कुंवारिया बाई (50) और बेटे दिलेश (11) के साथ रहता था। उसका बड़ा बेटा चुन्नी लाल बैगा दूसरे गांव में रहकर मजदूरी करता है। दरअसल, रविवार की रात सुखसिंह बैगा ने पत्नी से पैसे मांगे तो उसने देने से इनकार कर दिया। जिसे लेकर दोनों के बीच विवाद शुरू हो गया। पिता को मां से मारपीट करते देख दिलेश घर से भागकर पास ही स्थित अपने मामा के घर चला गया। रात में वहीं सो गया था। दिलेश सोमवार की सुबह उठने के बाद जब घर पहुंचा तो मां की लाश खून से लथपथ पड़ी मिली। कमरे में पिता का शव फांसी के फंदे पर लटक रहा था। वह दौड़कर बाहर निकला और पड़ोसियों को घटना की जानकारी दी। गांव के लोगों ने घटना की जानकारी बेलगहना पुलिस को दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई।पुलिस ने दिलेश से पूछताछ के बाद मामले में पत्नी की हत्या करने के बाद पति के फांसी लगाकर आत्महत्या करने की आशंका जताई है। चौकी प्रभारी भावेश शेंडे ने बताया कि, शव का पोस्टमॉर्टम कराया गया है। रिपोर्ट आने के बाद मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि, पति-पत्नी के बीच आए दिन विवाद होता रहता था। दोनों आपस में छोटी-बड़ी बातों को लेकर लड़ते रहते थे। इसके चलते परिवार के अन्य सदस्यों और ग्रामीणों ने उनके बीच रविवार को हुए विवाद पर ध्यान नहीं दिया। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नहाते समय गहरे पानी में चले गए, एक शहडोल, दूसरे तेलंगाना के रहने वाले थे

वाटरफॉल में डूबने से 2 की मौत

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मनेंद्रगढ़ मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में अमृत धारा जलप्रपात में डूबने से 2 स्वश्टरु अधिकारियों की मौत हो गई। पिकनिक मनाने 8 लोग वाटरफाल गए थे। जिनमें हसदेव क्षेत्र के अंडरग्राउंड माइंस के 2 अधिकारियों समेत 3 लोग नहाते हुए गहरे पानी चले गए थे। एक कर्मचारी किसी तरह बाहर निकल आया।

घटना पोड़ी थाना इलाके के नागपुर चौकी क्षेत्र की है। जानकारी के मुताबिक, मरने वालों की पहचान शुभम मनहर (32) निवासी शहडोल और पृथ्वी शेट्टी(36) निवासी तेलंगाना के रूप में हुई है। दोनों स्श्टरु के अंडर मैनेजर के पद पर पदस्थ थे। पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए मनेंद्रगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया है। दरअसल, स्श्टरु चिरमिरी में पदस्थ अधिकारियों समेत 8 लोग मंगलवार को पिकनिक मनाने के लिए अमृतधारा वाटरफाल गए थे। वे शाम करीब 4 बजे जलप्रपात के नीचे हसदेव नदी में नहा रहे थे। इस दौरान नहाते समय 3 कर्मचारी गहरे पानी में चले गए और डूबने लगे। एक कर्मचारी किसी तरह निकलने में सफल रहा। घटना की जानकारी मिलने पर चौकी प्रभारी शेष नारायण सिंह की टीम और स्श्टरु की रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची। शुभम मनहर और पृथ्वी शेट्टी को रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया। तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी।

हसदेव नदी पर है अमृतधारा वाटरफॉल

अमृतधारा वाटरफॉल राष्ट्रीय राजमार्ग 43 और नागपुर ग्राम पंचायत से 8 किलोमीटर दूर हसदेव नदी पर स्थित है, जो मनेंद्रगढ़ से 30 किलोमीटर और चिरमिरी से 50 किलोमीटर दूर स्थित है। जलप्रपात के पास ही भगवान भोलेनाथ का भी एक मंदिर है। यहां प्रशासन की तरफ से हर साल शिवरात्रि के मौके पर मेले का भी आयोजन किया जाता है। 90 फीट की ऊंचाई से गिरने वाले वाटरफॉल को देखने बारिश के दिनों में बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। यहां आने के लिए आपको नागपुर रेलवे स्टेशन, मनेंद्रगढ़ रेलवे स्टेशन या बैकुंठपुर रेलवे स्टेशन पर उतरना होगा।

पुलिस सहायता बंद

बरसात के समय सभी जलप्रपात के नजारे मनमोहक हो जाते हैं, जिसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से पहुंचते हैं, लेकिन ऐसी जगहों पर अनहोनी नहीं हो, इसके लिए सुरक्षा-व्यवस्था भी की जाती है, अमृतधारा के पास पुलिस सहायता केंद्र खोला गया था, लेकिन यह पिछले डेढ़ साल से बंद है।

प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित

बता दें कि, अमृतधारा जल प्रपात में नीचे जाकर नहाना प्रतिबंधित है। प्रशासन ने हादसों के कारण अमृतधारा जल प्रपात के कुछ इलाकों को प्रतिबंधित घोषित कर दिया है। यहां सावधानी के बोर्ड भी लगाए गए हैं लेकिन नियमित निगरानी नहीं की जाती है। ऐसे में यहां आने वाले लोग मनमाने तरीके से पानी में उतरकर नहाते हैं।

जमीन दलालों ने युवक कों जबरन ले गए, कमरे में बंद कर खूब मारा

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुजा अंबिकापुर में जमीन के सौदे को लेकर एक युवक का किडनैप है। चांदनी चौक निवासी संजय सोनी (45) मंगलवार को किसी काम से तहसील कार्यालय आए थे। जहां वे परिसर के बाहर चाय की गुमटी के पास खड़े थे। मौके पर पहुंचे दो युवकों ने उनके चेहरे पर गर्म चाय फेंकी और बाइक में बैठाकर नमनाकला ले गए। मामला कोतवाली थाना का है। जहां आरोपियों ने उसे एक कमरे में बंधक बनाकर मारपीट की। परिजनों की शिकायत के बाद पुलिस मोबाइल लोकेशन के आधार पर आरोपियों तक पहुंची और उनके कब्जे से संजय को छुड़ाया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी जमीन दलाल है। मामला लाखों के लेन देन से जुड़ा है। दोनों पक्षों से मामले में पूछताछ के बाद एफआई आर दर्ज किया जाएगा। मामले की जानकारी संजय सोनी के साथ गए युवक ने परिजनों को दी। परिजनों ने इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। पुलिस ने संजय सोनी का मोबाइल लोकेशन ट्रेस किया तो मोबाइल का लोकेशन नमनाकला में शीतला मंदिर के पास मिला। पुलिस टीम शीतला मंदिर के पास पहुंची। पुलिस ने एक कमरे से संजय सोनी को बरामद किया। संजय सोनी का अपहरण कर ले जाने वाले दो युवकों को भी हिरासत में ले लिया गया है। पकड़े गए युवक जमीन दलाली करते हैं। पकड़े गए युवकों ने दावा किया कि संजय सोनी के साथ उन्होंने एक जमीन का सौदा किया था और उन्हें 22 से 25 लाख रुपए दिए गए थे। इसके बाद संजय सोनी जमीन का सौदा नहीं कर रहा है। वहीं संजय सोनी ने बताया कि युवकों ने ढाई लाख रुपए दिए थे और जमीन का एग्रीमेंट किया था, लेकिन एग्रीमेंट अवधि तक युवकों ने जमीन का सौदा नहीं किया। वे जमीन दलाल हैं और वे ग्राहक खोज रहे थे। एग्रीमेंट की अवधि समाप्त हो चुकी है, इसलिए जमीन पर उनका दावा नहीं बनता।जमीन को लेकर लाखों का लेन-देन का मामला होने के कारण पुलिस ने तत्काल एफआईआर दर्ज नहीं की है, चूंकि मामला अपहरण एवं मारपीट से जुड़ा है, इसलिए कोतवाली पुलिस दोनों पक्षों का बयान दर्ज करने के बाद एफआई आर दर्ज कर रही है।

रास्ता रोककर चाकू से हमला

रायपुर में गाली गलौज के बाद वारदात, पुलिस ने लिया एक्शन

ऑडीटर ऑडीटर
Mediaauditor.in

रायपुर में रास्ता रोककर एक युवक पर चाकू से हमला हुआ है। आरोपी ने गाली गलौज के बाद वारदात को अंजाम दिया है। इस मामले में पुलिस ने आर्म्स एक्ट में एक्शन लिया है। पुलिस ने युवक के पास से चाकू बरामद किया है। यह पूरा मामला उरला थाना क्षेत्र का है।

8 अप्रैल को वीरेन्द्र विश्वकर्मा ने उरला थाना में शिकायत दर्ज करवाई कि रात करीब 10 बजे स्कूटी से अपने घर जा रहा था। उसके साथ उसका दोस्त कृष्णा भारती था। रावांभाठा खेल मैदान के पास विनय कोलने ने रास्ता को रोक दिया। वह गाली गलौज करने लगा। फिर अपने पास रखे चाकू से वीरेंद्र पर हमला कर दिया। जिससे वीरेंद्र घायल हो गया। इसके अलावा आरोपी ने उसके दोस्त के साथ भी मारपीट की। इस मामले में पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक लोहे का चाकू जब्त किया है। इस मामले में पुलिस ने आर्म्स एक्ट में एक्शन लिया है। पुलिस का आरोपी ने कोर्ट के आदेश से जेल भेज दिया है।

पानी की समस्या को लेकर सड़क पर उतरीं महिलाएं

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रायपुर में बुधवार को वार्ड क्रमांक-22 पंडित ईश्वरी चरण शुक्ल वार्ड की महिलाएं पानी की समस्या को लेकर सड़क पर उतर गईं। सड़क पर चक्काजाम कर दिया। महिलाओं ने बताया कि, पिछले एक सप्ताह से डुमरतालाब के इलाकों में पानी की समस्या बनी हुई है।

इसकी लगातार शिकायत करने के बाद भी अधिकारी और पार्षद नजर अंदाज कर रहे हैं। जिसके बाद उन्होंने सड़क पर आकर आंदोलन कर दिया। करीब आधे घंटे महिलाओं ने चक्काजाम किया, फिर वार्ड पार्षद मीना ठाकुर भी मौके पर पहुंची। जिसके बाद महिलाएं सड़क से हटीं। पानी की समस्या को लेकर आंदोलन के दौरान वार्ड पार्षद, ठेकेदार और इंजीनियर मौके पर पहुंचे। वार्ड पार्षद मीना ठाकुर भी प्रदर्शन कर रही महिलाओं के साथ बैठ गई। पार्षद ने ने बताया कि, नवरात्रि में त्योहार के कारण काम नहीं हो पा रहा था। पार्षद ने बताया कि, डुमरतालाब क्षेत्र में जिस पंप से पानी की सप्लाई की जा रही थी। वो पंप अंदर गिर गया था। जिस कारण पानी की सप्लाई प्रभावित थी। अभी नया पंप लगाया गया है। महिलाओं की समस्या का समाधान हो गया है। रायपुर के अलग-अलग वार्डों में पानी की समस्या को लेकर वार्ड वासी परेशान हो रहे हैं। टिकरापारा के नंदी चौक में यादव मोहल्ला निवासियों ने निगम से शिकायत की है।

उन्होंने बताया कि पिछले 15 साल से करीब 75 परिवारों वाले मोहल्ले पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। यहां रहने वाले लोग के लिए सिर्फ एक बोर भरोसे रहते हैं जो गर्मी में हर साल सूख जाता है। अभी भी बोर से पानी आना बंद हो गया है। करीब 75 परिवारों को पानी मिलना बंद हो गया। रोज टैंकर का इंतजार करना पड़ता है और टैंकर भी दूर खड़ा हो पाता है। वहीं से पानी लाकर उपयोग करना पड़ रहा है। लोगों ने मोहल्ले के लिए पाइप लाइन बिछाकर पीने का पानी के लिए नल लगाने की मांग की है।

पीएम को पसंद आया रायपुर की पुचका-गर्ल का आइडिया

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

रायपुर की पुचका गर्ल पी एम नरेंद्र मोदी से मिलीं। अपने यूनिक स्टार्टअप आइडिया की वजह से उन्हें ये मौका मिला। खुद पी एम नरेंद्र मोदी ने बैठकर उनका प्रेजेंटेशन देखा, और सराहा भी। दरअसल, मंगलवार को देशभर में मुद्रा लोन से कुछ यूनिक और सफल बिजनेस स्टार्टअप करने वालों से दिल्ली में प्रधानमंत्री ने मुलाकात कीं। इनमें छत्तीसगढ़ के रायपुर से ईशा पटेल भी शामिल रहीं। ईशा का रायपुर में गोलगप्पे (गुपचुप) का कैफे है। हाउस ऑफ पुचका नाम का ये स्टार्टअप हाल ही में ईशा ने शुरू किया है। बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन कर चुकीं ईशा मुंबई की एक कंपनी में 6 लाख रुपए सालाना के पैकेज पर काम कर रही थीं। कॉर्पोरेट कंपनी में काम से उब चुकीं 23 साल की ईशा ने, अपना बिजनेस शुरू करने का सोचा। दोस्तों और परिवार के लोगों से मिले सपोर्ट के बाद उन्होंने इसे शुरू किया। 6 लाख रुपए का मुद्रा लोन लिया। ईशा बताती हैं जब मैंने फंडिंग के बारे सोचा तो लोन चाहिए था। तब मेरी उम्र 22 थी, इस उम्र में बैंक लोन दें और ये पैसे कैसे वापस बैंक को हम लौटाएंगे, इसे लेकर फंडिंग एजेंसी भरोसा नहीं जता पा रही थीं। ऐसे में मैंने रिसर्च किया तो सरकारी योजना के बारे पता चला और हमें मदद मिली। पी एम नरेंद्र मोदी ने ईशा से मुलाकात में कहा कि आपने इतना रिस्क लिया।

आपके दोस्त इसपर क्या सोचते हैं, ईशा ने जवाब में बताया कि प्रॉपर रिसर्च के साथ काम करें तो रिजल्ट मिलते हैं। मीडिया ऑडीटर से चर्चा में ईशा ने कहा कि अच्छी सैलरी छोड़ कर आना रिस्क तो था ही मगर काम करने के दौरान कुछ सेविंग की और कैफे बिजनेस के बारे में लगातार दोस्तों से बात की। स्टडी किया तो समझ आया कि कैसे प्रॉफिट जनरेट किया जाए। इसके बाद काम शुरू किया, आज रिस्पॉन्स अच्छा है। ईशा ने बताया कि हम 5 तरह के चटपटे पानी के साथ गोलगप्पे सर्व करते हैं।

कोलकाता वाला पानी खूब पसंद किया जाता है। इसलिए हमनें अपने स्टार्टअप का नाम हाउस ऑफ पुचकास रखा। इसके लिए हमनें अहमदाबाद से मशीनें मंगवाई हैं, जो हाइजीन के साथ गोलगप्पे तैयार करती है। ईशा ने बताया कि उनका परिवार रायपुर के खमतराई में रहता है। पिता नवीन पटेल बिजनेसमैन और मां रश्मि होममेकर हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुद्रा योजना के 10 साल पूरे होने पर ये मिट-अप किया। प्रधानमंत्री ने यूथ को स्टार्टअप के लिए इंस्पायर करते हुए बताया कि मुद्रा लोन से वो ये काम कर सकते हैं। शुरुआत में 50,000 रुपए से लेकर 5 लाख रुपए तक के लोन का दायरा था। अब इसे बढ़ाकर अब 20 लाख रुपए कर दिया गया है। इस योजना के तहत 52 करोड़ का लोन अब तक दिया गया है। 2015 में शुरू हुई इस योजना का उद्देश्य रेहड़ी-पटरी वाले से लेकर छोटे कारोबार को बिना किसी जमानत के लोन मुहैया कराना है। इस योजना के तहत कोई भी व्यक्ति अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए लोन ले सकता है।

फर्जी दस्तावेज से कराया जमीन का सीमांकन

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर में करोड़ों रुपए कीमती जमीन हड़पने के लिए जमीन कारोबारी नरेंद्र मोटवानी और उसके रिश्तेदारों ने कूटरचना-फर्जीवाड़ा कर सीमांकन करा लिया। इस काम के लिए उन्होंने दूसरी महिला को जमीन मालिक मीना गंगवानी बनाकर तहसील में खड़ा किया। फर्जी दस्तावेज से सीमांकन रिपोर्ट अपने पक्ष में हासिल करा ली। इस मामले में वास्तविक भू-स्वामी की रिपोर्ट पर पुलिस ने नरेंद्र मोटवानी, डूलाराम मोटवानी समेत चार लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। मामला तोरवा थाना क्षेत्र का है। दरअसल, गुरु नानक चौक स्थित पेंडलवार नर्सिंग होम के पास रहने वाली मीना गंगवानी (50) गृहिणी है। नर्सिंग होम के पास सड़क से लगी खसरा नंबर 445 में उनकी 8.90 डिसमिल करोड़ों रुपए कीमती भूमि है, जो उन्हें पति की मौत के बाद विरासत में मिली है। पति के जीवित रहते ही अशोक उबरानी से जमीन का कब्जा प्राप्त करने के संबंध में विवाद चला आ रहा है। अशोक ने अपने नाम की भूमि खसरा 453/09 व 454/10 को देखरेख के लिए डूलाराम मोटवानी को पावर ऑफ अर्टानी बना दिया था। तब से डूलाराम मोटवानी मीना गंगवानी और उसके पूरे परिवार पर संपत्ति छोड़ने दबाव बना रहा है। उनके स्वामित्व की भूमि पर पति ने जीवित रहते हुए बाउंड्रीवॉल बनवाया था, जिसे अपनी जमीन की बाउंड्री बताकर डूलाराम पहले ही तोड़ चुका है। इसके बाद से दोनों के बीच सीमांकन को लेकर विवाद शुरू हो गया।

ऐसे में डूलाराम मोटवानी ने तहसील में 10 मार्च 2022 को मीना गंगवानी के नाम से दूसरी महिला को खड़े कर फर्जी आवेदन, शपथ पत्र आदि पेश कर फर्जी हस्ताक्षर कराया। इसके बाद सीमांकन रिपोर्ट तैयार कराई। डूलाराम ने अतिरिक्त तहसीलदार के न्यायालय जमीन खुद की होना बताकर मीना के बेटे के खिलाफ कब्जा दिलवाने आवेदन पेश कर बाउंड्री तोड़ दी। मामले में पुलिस ने डूलाराम मोटवानी, नरेंद्र मोटवानी, महेंद्र मोटवानी और राजेंद्र मोटवानी के खिलाफ दस्तावेजों में कूटरचना कर धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है।

विमान में शख्स ने बगल के पैसेंजर पर पेशाब की

नई दिल्ली (एजेंसी)। एअर इंडिया की फ्लाइट में एक शख्स ने बगल में बैठे पैसेंजर पर पेशाब कर दी। विमान दिल्ली से बैंकॉक जा रहा था। एअर इंडिया के स्टेटमेंट के मुताबिक, घटना 9 अप्रैल की है। केबिन क्रू ने बताया कि दिल्ली-बैंकॉक फ्लाइट में एक पैसेंजर ने नियम के खिलाफ बर्ताव किया। मामले को डायरेक्टरेट ऑफ सिविल एविएशन के अफसरों को बता दिया गया है। मामले पर नागरिक उड्डयन मंत्री के राममोहन नायडू ने कहा कि अगर कुछ भी गलत हुआ है तो हम जरूरी कार्रवाई करेंगे। पीड़ित ने शिकायत करने से मना किया एयरलाइन ने बताया कि क्रू ने सारे नियम-कायदे फॉलो किए। इसके बाद अधिकारियों को मामले की जानकारी दी। पेशाब करने वाले पैसेंजर को चेतावनी भी दी गई। यही नहीं, क्रू ने पीड़ित यात्री को बैंकॉक में अधिकारियों के सामने शिकायत उठाने में सहायता करने की पेशकश की, जिससे उसने इनकार कर दिया।

बिहार में बिजली गिरने से 10 लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में भीषण गर्मी के बीच बिहार में बिजली गिरने से 3 जिलों में 10 लोगों की मौत हो गई है। आज बुधवार को 4 जिलों में ओले गिरने का अलर्ट और 27 जिलों में हल्की बारिश होने की संभावना है। असम और बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव का क्षेत्र के कारण बिहार तक नमी युक्त हवाएं आ रही है, जिनसे उत्तर-पूर्व के इलाकों में मौसम बदला है। इधर, देश के उत्तरी-पश्चिमी राज्यों में अप्रैल के पहले हफ्ते से ही लू का असर तेज होता जा रहा है। राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा और पंजाब के कई हिस्से हीटवेव की चपेट में हैं। मध्य प्रदेश के 30 जिलों में आज हीटवेव का अलर्ट है। दिल्ली में 15 साल अप्रैल में तापमान 40 डिग्री के पार गया है। कई इलाकों में हीटवेव के हालात हैं। इससे पहले 2011 में यह स्थितियां बनी थीं। राजस्थान के बाड़मेर में मंगलवार को टेम्परेचर 47 डिग्री रहा। 10 साल बाद अप्रैल में बाड़मेर का पारा 47 डिग्री पहुंचा है। जैसलमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ समेत कई जिलों में तेज गर्मी रही। मौसम एजेंसी स्काईमेट ने अनुमान जताया है कि इस साल देश में मानसून सामान्य रहेगा। एजेंसी के मुताबिक, 80त्न से ज्यादा संभावना है कि मानसून सामान्य या उससे अधिक रहेगा।

नौसेना को बड़ी ताकत, हिंद महासागर में बढ़ेगी क्षमता

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने फ्रांस से 26 मरीन राफेल फाइटर जेट की खरीदी को मंजूरी दे दी है। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा पर कैबिनेट कमेटी ने 9 अप्रैल को डील पर मुहर लगाई। भारत को 64 हजार करोड़ रुपए में 26 मरीन फाइटर मिलने हैं। इसके बाद फ्रांस 22 सिंगल-सीटर और 4 ट्विन-सीटर जेट भारतीय नौसेना को सौंपेगा। इन्हें हिंद महासागर में चीन से मुकाबले के लिए आईएनएस विक्रांत पर तैनात किया जाएगा। दोनों देशों के बीच 26 राफेल मरीन जेट की खरीद को लेकर कई महीनों से बातचीत चल रही थी। भारत नौसेना के लिए राफेल मरीन की डील उसी बेस प्राइज में करना चाहता था, जो 2016 में वायुसेना के लिए 36 विमान खरीदते समय रखी थी। इस डील की जानकारी सबसे पहले पीएम मोदी की 2023 की फ्रांस यात्रा के दौरान सामने आई थी।

ग्लोबल स्किल पार्क की सभी सीटें भरी जाएं -मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्लोबल स्किल पार्क की ब्रांड वैल्यू को स्थापित करते हुए यहाँ की सभी सीटें भरना सुनिश्चित किया जाएं। स्किल पार्क में संचालित सभी तकनीकी पाठ्यक्रमों, उनकी उपयोगिता और रोजगारपरक क्षमता पर केंद्रित प्रचार-प्रसार अभियान का संचालन व्यापक स्तर पर किया जाए।

प्रदेश में विद्यमान उद्योगों की मांग के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और युवाओं को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में निजी क्षेत्र का भी सहयोग लिया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के हर विकासखंड में आईटीआई की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आईटीआई और पॉलिटेक्निक के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय स्तर पर विद्यमान औद्योगिक इकाइयों के समन्वय से गतिविधियां संचालित की जाएं। इससे युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार की उपलब्धता

सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तकनीकी शिक्षा, कौशल एवं रोजगार विभाग की समीक्षा में यह निर्देश दिए। समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में हुई बैठक में तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार, कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा तथा अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं को स्वरोजगार, उद्यमिता और रोजगार के लिए प्रशिक्षित करने में तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने विभाग में संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों की प्रगति के प्रति असंतोष व्यक्त किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि युवाओं के कौशल विकास और उनके लिए रोजगारपरक कार्यक्रमों के लक्ष्य और समय-सीमा निर्धारित कर परिणाममूलक गतिविधियां संचालित की जाए।

बंगाल में लागू नहीं होगा वक्फ कानून

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने मंगलवार को कहा कि नया वक्फ कानून पश्चिम बंगाल में लागू नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक पश्चिम बंगाल में ममता दीदी है, मुस्लिम समुदाय की संपत्ति की रक्षा करेगी। ममता कोलकाता में जैन समाज के कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने कहा- कुछ लोग पूछते हैं कि मैं हर धर्म के स्थानों पर क्यों जाती हूं। मैं पूरी जिंदगी जाऊंगी। चाहे कोई गोली मार दे, मुझे एकता से अलग नहीं किया जा सकता। बंगाल में धर्म के नाम पर बंटवारा नहीं होगा।

तमिलनाडु-आंध्र प्रदेश में 1332 करोड़ का रेल प्रोजेक्ट मंजूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय कैबिनेट की मीटिंग में बुधवार को कई अहम प्रोजेक्ट्स को मंजूरी मिली। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में तिरुपति से कटपडी तक 104 किमी की सिंगल रेलवे लाइन को डबल लाइन में बदला जाएगा। इसमें करीब 1332 करोड़ रुपए की लागत आएगी। इससे आंध्र प्रदेश के तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर तक कनेक्टिविटी बढ़ने के साथ ही अन्य प्रमुख स्थलों जैसे श्री कालहस्ती शिव मंदिर, कनिपकम विनायक मंदिर, चंद्रगिरी किला आदि

तक भी रेल कनेक्टिविटी हो सकेगी। यह मल्टी-ट्रैकिंग प्रोजेक्ट से करीब 400 गांवों और करीब 14 लाख आबादी तक कनेक्टिविटी बढ़ेगी। इसके साथ ही इस परियोजना से रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में करीब 113 किमी बढ़ जाएगा। इसके तहत कमांड एरिया डेवलपमेंट एंड वाटर मैनेटमेंट को अपग्रेड करने के लिए 1600 करोड़ रुपए मंजूर हुए हैं।

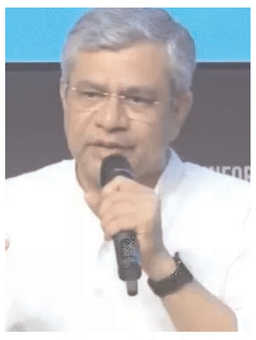

इस योजना से किसी क्लस्टर में मौजूदा नहरों या पानी के अन्य स्रोतों से सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति की जा सकेगी। इसमें पानी के सोर्स से एक हेक्टेयर तक के खेत तक अंडरग्राउंट पाइप लाइन के जरिए प्रेशराइज्ड वाटर सप्लाई होगी। इससे माइक्रो एरिगेशन (सूक्ष्म सिंचाई) के लिए एक मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाया जाएगा।

गुजरात में कांग्रेस का 84वां अधिवेशन, राहुल बोले- वक्फ बिल संविधान पर हमला

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के अहमदाबाद में कांग्रेस के दो दिवसीय 84वें अधिवेशन का समापन हो गया। अधिवेशन में बुधवार को राहुल गांधी बोले- कुछ दिन पहले बीजेपी ने लोकसभा में वक्फ संशोधन बिल पास किया। यह फ्रीडम ऑफ रिलीजन, संविधान पर आक्रमण है। आरएसएस के मुखपत्र ऑर्गनाइजर में लिखते हैं कि क्रिश्चियंस पर आक्रमण करने जा रहे हैं। ये एंटी-रिलीजन बिल है। ये देश के सभी लोगों को मालूम होना चाहिए। राहुल ने कहा- बांग्लादेश के नेता भारत के खिलाफ बयान दे रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री वहां के नेता से मिले। उनके मुंह से एक शब्द नहीं निकला। कहां गई 56 इंच की छाती। इससे पहले मंगलवार को पहले दिन कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक चार घंटे चली। आज दूसरे दिन साबरमती रिवरफ्रंट पर मुख्य अधिवेशन हो रहा है, जिसमें देशभर से 1700 से अधिक कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी और राहुल मौजूद हैं, लेकिन प्रियंका गांधी नहीं पहुंचीं। चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए, ईवीएम से नहीं मल्लिकार्जुन खड़गे ने ईवीएम पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार ने ऐसी तकनीक बनाई है, जिससे उन्हें फायदा हो और विपक्ष को नुकसान। उनका सुझाव है कि चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए

मुंबई हमले के दोषी तहव्वुर को भारत लाया जा रहा

वाशिंगटन (एजेंसी)। 2008 मुंबई आतंकी हमलों के दोषी तहव्वुर राणा को आज अमेरिका से भारत लाया जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, जांच एजेंसी एनआईए और खुफिया एजेंसी आरएडब्ल्यू की एक जॉइंट टीम तहव्वुर को लेकर स्पेशल फ्लाइट से रवाना हो चुकी है। उसके देर रात तक भारत पहुंचने की संभावना है। एनआईए अगले कुछ हफ्तों तक उसे अपनी कस्टडी में रखेगी। राणा के प्रत्यर्पण पर रोक लगाने की याचिका अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने

सोमवार को खारिज कर दी। तहव्वुर ने भारत आने से बचने के लिए याचिका दायर की थी। उसने अपनी याचिका में खुद को पार्किंसन बीमारी से पीड़ित बताते हुए कहा था कि अगर भारत डिपोर्ट किया गया तो उसे प्रताड़ित किया जा सकता है।

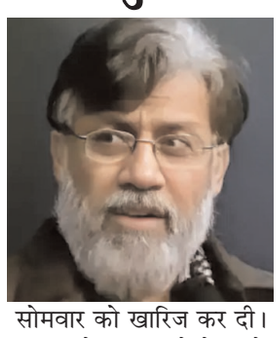

तहव्वुर राणा को 2009 में एफबीआई ने गिरफ्तार किया था। राणा को अमेरिका में लश्कर-ए-तैयबा का समर्थन करने के लिए दोषी ठहराया गया था। अब तक वह लॉस एंजिल्स के एक डिटेंशन सेंटर में बंद था। 26 नवंबर 2008 को मुंबई में आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकियों ने हमले किए। ये हमले चार दिनों तक चले। इन हमलों में कुल 175 लोग मारे गए, जिनमें 9 हमलावर भी शामिल थे और 300 से अधिक लोग घायल हुए।

गुरमीत राम रहीम जेल से 13वीं बार बाहर आया

रोहतक (एजेंसी)। हरियाणा में रोहतक की सुनारिया जेल में रेप और हत्या के मामले में 20 साल की सजा काट रहा डेरा मुखी गुरमीत राम रहीम एक बार फिर जेल से बाहर आया है। उसे 21 दिन की फरलो मिली है। इस दौरान राम रहीम पूरे 21 दिन सिरसा डेरे में ही रहेगा।

बुधवार सुबह करीब साढ़े 6 बजे उसे कड़ी सुरक्षा के बीच जेल से सिरसा पहुंचाया गया। राम रहीम की मुख्य शिष्या हनीप्रीत उसे लेने रोहतक जेल आई थी। सिरसा पहुंचे राम रहीम ने वीडियो जारी कर कहा, %%फिर से श्रद्धालुओं की सेवा में हाजिर हूं। सभी अपने-अपने घरों में रहें और डेरे के जिम्मेदार लोग जो कहें, वही करें। राम रहीम डेरे के स्थापना दिवस के 77वें समारोह में शामिल होगा। डेरा सच्चा सौदा की स्थापना 29 अप्रैल 1948 को संत शाह मस्ताना ने की थी। इसी में शामिल होने राम रहीम को फरलो मिली है। इससे पहले वह 28 जनवरी 2025 को ही 30 दिन की पैरोल पर जेल से बाहर आया था। तब उसने पैरोल के 10 दिन सिरसा डेरा और 20 दिन क्ककेे बरनावा में काटे थे। राम रहीम के 13वीं बार बाहर आने के बाद उसकी सभी पैरोल और फरलों की अवधि 325 दिन हो गई है।

सैफ अली हमला केस, पुलिस ने 1000 पेज की चार्जशीट दायर की

मुंबई (एजेंसी)। सैफ अली खान पर हुए हमले के मामले में मुंबई पुलिस ने बांद्रा कोर्ट में 1000 पेज की चार्जशीट दाखिल की है। इसमें आरोपी शरीफुल इस्लाम के खिलाफ कई सबूत शामिल किए गए हैं।

पुलिस के मुताबिक, चार्जशीट में फोरेंसिक लैब की रिपोर्ट का भी जिक्र किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है क्राइम सीन पर सैफ अली

खान के शरीर से और आरोपी के शरीर से मिले चाकू के टुकड़े एक ही चाकू के तीन टुकड़े हैं। साथ ही चार्जशीट में आरोपी के बाएं हाथ के फिंगरप्रिंट की रिपोर्ट का भी जिक्र है।

इससे पहले 29 मार्च को सैफ अली खान पर हमले के आरोप में गिरफ्तार मोहम्मद शरीफुल इस्लाम शहजाद ने मुंबई सेशन कोर्ट में जमानत याचिका दायर की थी। आरोपी ने दावा किया था कि उसके खिलाफ झूठा मामला दर्ज किया गया है और उसे फंसाने के लिए साजिश की जा रही है।

कंगना ने कांग्रेस को अंग्रेजों की बची हुई औलाद बताया

मंडी (एजेंसी)। मंडी की सांसद एवं बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनोट ने आज फिर से कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। अपने 5 दिन के दौरे के आखिरी दिन बुधवार को सुंदरनगर के कांगू में कंगना ने कहा, भाजपा सनातनी संस्कृति से जुड़ी पार्टी है। इसके विपरीत कांग्रेस अंग्रेजों की बची हुई औलाद है। कंगना ने कांग्रेस की विचारधारा को %चोर-चोर मौसेरे भाई% जैसा बताया। उन्होंने कहा कि जहां भी कांग्रेस के नेता मिलते हैं, वहां डाकुओं का गैंग बन जाता है। कंगना ने कांग्रेस नेत्री अल्का लांबा पर भी निशाना साधा। कहा, चुनाव से पहले महिलाओं से बड़े-बड़े वादे करके वे चली गईं और कोई भी वादा पूरा नहीं किया। सांसद ने लोकसभा में अपनी भूमिका का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि एक वोट से सरकार गिर सकती है। वक्फ संशोधन बिल पर वोट करते समय उन्होंने क्षेत्र के लोगों को याद किया। कंगना ने कहा कि प्रदेश की जनता ने पीएम मोदी के लिए चारों लोकसभा सीटें भाजपा की झोली में डाली हैं।

बैंकों से मिलने वाला कर्ज हो सकता है सस्ता

मुंबई (एजेंसी)। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी, आरबीआई ने रेपो रेट को 0.25 प्रतिशत घटाकर 6 प्रतिशत कर दिया है। पहले ये 6.25 प्रतिशत थी। यानी, आने वाले दिनों में लोन सस्ते हो सकते हैं। वहीं आपकी ईएमआई भी घटेगी। नए वित्त वर्ष में आरबीआई की पहली मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी मीटिंग के फैसलों की जानकारी आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने आज 9 अप्रैल को सुबह 10 बजे दी। ये मीटिंग 7 अप्रैल को शुरू हुई थी।

इससे पहले वित्त वर्ष 2024-25 की आखिरी मीटिंग में आरबीआई ने ब्याज दरों में 0.25 प्रतिशत की कटौती की थी।

फरवरी में हुई मीटिंग में ब्याज दरों को 6.5 प्रतिशत से घटाकर 6.25 प्रतिशत कर दिया था। मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी की ओर से ये कटौती करीब 5 साल बाद की गई थी। रेपो रेट घटने के बाद बैंक भी हाउसिंग और ऑटो जैसे लोन्स पर अपनी ब्याज दरें कम कर सकते हैं। वहीं ब्याज दरें कम होंगी तो हाउसिंग डिमांड बढ़ेगी। ज्यादा लोग रियल एस्टेट में निवेश कर सकेंगे। इससे रियल एस्टेट सेक्टर को बूस्ट मिलेगा। आरबीआई जिस ब्याज दर पर बैंकों को लोन देता है उसे रेपो रेट कहते हैं। रेपो रेट कम होने से बैंक को कम ब्याज पर लोन मिलेगा। बैंकों को लोन सस्ता मिलता है, तो वो अकसर इसका फायदा ग्राहकों को पास कर देते हैं। यानी, बैंक भी अपनी ब्याज दरें घटा देते हैं।

राम मंदिर में 18 मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा जून में

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर में रामलला के अलावा 18 और मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा जून में होगी। 3 दिन प्राण प्रतिष्ठा का पूजन समारोह होगा। ये मूर्तियां राजस्थान के जयपुर में बनाई जा रही हैं। 15 अप्रैल के बाद अयोध्या पहुंच जाएंगी। इसके बाद 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया के मौके पर सिंहासन पर मूर्तियों को रखा जाएगा। फिर जून में प्राण प्रतिष्ठा समारोह होगा। ट्रस्ट की बैठक में समारोह के दिन तय किए जाएंगे। ये बातें बुधवार को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहीं। चंपत राय ने कहा- मूर्तियां भारी हैं। इसलिए इन्हें सिंहासन पर रखने के लिए बड़ी मशीनों की मदद ली जाएगी। 30 अप्रैल तक टावर क्रेन मंदिर परिसर से हटा लेंगे। इसके बाद प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारियां तेज की जाएंगी। सभी ध्वज दंड भी आ गए हैं। प्राण प्रतिष्ठा से पहले इनकी सामूहिक पूजा की जाएगी।

वाराणसी गैंगरेप, बैडमिंटन खिलाड़ी बनना चाहती थी बिटिया

वाराणसी (एजेंसी)। मेरी बेटी 29 मार्च को अचानक लापता हो गई। दोस्तों, रिश्तेदारी सब जगह ढूंढा। उसके दोस्त दानिश और आयुष को भी फोन किए। 4 अप्रैल की सुबह पुलिस ने मेरी बेटी को घर पहुंचाया। वह बेसुध थी, हालत बिल्कुल ठीक नहीं थी। बेटी के साथ हुई घटना को बयां करते वक्त पिता भावुक हो जाते हैं। खुद को संभालते कहते हैं- आप समझिए, उसको नॉर्मल होने में 48 घंटे लगे। फिर उसने जो कुछ बताया, वह सुनकर हम लोगों का दिल बैठ गया। मेरी बेटी के साथ 6 दिन में 23 लड़कों ने हैवानियत की, फिर सड़क किनारे फेंक दिया। पुलिस ने पहले हमारी मदद तक नहीं की। फिर मीडिया के दबाव में 7 अप्रैल को स्नङ्घक्र दर्ज की। बेटी अब घर के लड़कों को भी देखकर चीख उठती है। बेटी ने क्लास में पढ़ने वाले दानिश, साजिद, राज खान और आयुष के नाम बताए, जो उसको अपने साथ लेकर गए थे। जिन लड़कों पर उसने भरोसा किया, उन्होंने ने ही धोखा दिया। वह इस वक्त मेंटल ट्रॉमा से गुजर रही है। दैनिक भास्कर ने गैंगरेप पीड़िता के पिता का दर्द समझा।

हम गरीब लोग हैं। हमारी जिंदगी में इस भूचाल की शुरुआत 29 मार्च की सुबह हुई। बेटी ने कहा कि कुछ किताब खरीदनी है, मैं एक सहेली के साथ बाजार तक जा रही हूं। हम लोगों लगा कि बेटी 4-5 घंटे में घर वापस आ जाएगी। मगर ऐसा हुआ नहीं।

हमने उसका मोबाइल नंबर मिलाया, मगर फोन बंद था। हमने रिश्तेदार, उसके दोस्तों को फोन किए। कुछ पता नहीं चला। हम लोग घबरा गए, लालपुर-पांडेयपुर थाने पहुंचे। बेटी के लापता होने की शिकायत पुलिस को सौंपी। पुलिस ने बेटी का हुलिया पूछा, फिर रिपोर्ट लिख ली। पुलिस ने भरोसा दिया कि हम पता कर रहे हैं, जैसे ही कुछ मालूम होगा, आपको बता देंगे।

7 मरीजों की मौत का आरोपी बोला-हां, मेरी डिग्री फर्जी

दमोह (एजेंसी)। दमोह के मिशन अस्पताल में 7 मरीजों की मौत का आरोपी फर्जी डॉक्टर नरेंद्र यादव उर्फ नरेंद्र केम जॉन 5 दिन की रिमांड पर है। पुलिस पूछताछ में उसने कई खुलासे किए हैं। उसने बताया कि भारत की मेडिकल कम्युनिटी में अपना रुतबा बनाने के लिए उसने विदेशी नाम रखा। इसी नाम से सभी फर्जी दस्तावेज भी बनवा लिए। दरअसल, दमोह के मिशन अस्पताल में लंदन के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एन जोन केम के नाम पर फर्जी डॉक्टर ने ढाई महीने में 15 हार्ट ऑपरेशन कर डाले। आरोप है कि दिसंबर 2024 से फरवरी 2025 के बीच हुए इन ऑपरेशन में 7 मरीजों की मौत हो गई।

इसका खुलासा तब हुआ जब एक मरीज के परिजन ने संदेह होने पर डॉक्टर की शिकायत की। इसके बाद मामला मानवाधिकार आयोग तक पहुंच गया। आयोग की टीम मृतकों के परिजनों से पूछताछ कर चुकी है। बता दें कि आरोपी नरेंद्र यादव को शनिवार की रात को यूपी के प्रयागराज से गिरफ्तार किया गया था। आरोपी डॉक्टर नरेंद्र यादव को पुलिस की पूछताछ के दौरान बुधवार दोपहर में बुखार आ गया। वह बीपी और शुगर का मरीज है। इसकी दवाइयां चल रही हैं। पुलिस ने किसी सरकारी डॉक्टर को भी चेकअप के लिए बुलाया है।

इसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती किया जाएगा।

मंगलवार रात में आरोपी डॉक्टर ने तीन रोटी, चावल और सब्जी खाई थी। बुधवार सुबह नाश्ते में चाय और ब्रेड की डिमांड की थी, जिसे पूरा भी किया गया। दोपहर के खाने में उसने दो रोटी और सब्जी खाई है। पूछताछ में आरोपी डॉक्टर ने बताया, 'मेरी एमबीबीएस की डिग्री असली है, जो मैंने नार्थ बंगाल मेडिकल कॉलेज से की थी। मेरा असली नाम नरेंद्र यादव है। मैं कानपुर का रहने वाला हूं। फर्जी दस्तावेज बनाने के लिए पत्नी और बच्चों के फर्जी नाम भी शामिल किए, जबकि अविवाहित हूं।

रोहित शर्मा फिर फ्लॉप

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में मुंबई इंडियंस के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा का फ्लॉप शो जारी है। वानखेड़े स्टेडियम में खेले जा रहे मुकाबले में उनका बल्ला फिर से शांत रहा। आरसीबी के खिलाफ वह महज 9 गेंद में 17 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें यश दयाल ने आउट किया। रोहित के विकेट गिरने पर उनकी पत्नी रितिका सजदेह का रिएक्शन सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

दरअसल, 222 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित शर्मा ने कुछ आक्रामक शॉट्स खेले। उनके बल्ले से दो चौके और एक छक्का निकला। रोहित ने भुवनेश्वर कुमार पर जोरदार छक्का लगाया। वह ज्यादा देर क्रीज पर नहीं टिक सके। यश दयाल की अंदर आती गेंद पर रोहित बोल्ड हो गए। रोहित के विकेट पर रितिका सजदेह का मुंह उतर गया। उनके चेहरे से एकदम हंसी गायब हो गई। रोहित के विकेट पर रितिका का रिएक्शन जमकर वायरल हो रहा है।

आईसीसी मोबाइल क्रिकेट गेम लांच करेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) अब अपने पहले मोबाइल क्रिकेट गेम को लॉन्च करने जा रही है। इससे क्रिकेट प्रशंसकों को अब मैच देखने के साथ ही गेमिंग की दुनिया में उतरने का अवसर भी मिलेगा। इस गेम से प्रशंसकों के साथह आईसीसी को भी खासा लाभ होगा। एक रिपोर्ट के अनुसार आइसीसी की डिजिटल टीम ने इस मोबाइल गेम को लॉन्च करने का प्रस्ताव रखा है। योजना को मंजूरी मिलने के बाद इसे लागू किया जाएगा। इसमें डेवलपर्स के लिए एक टेंडर जारी किया जाएगा। इकसे अलावा आईसीसी को गेमिंग के लिए जरुरी लाइसेंस भी लेना होगा।

आईसीसी ये गेम इसलिए लांच कर रही है क्योंकि वह जानती है दुनिया भर में क्रिकेट फैल रहा है। वहीं भारत में क्रिकेट गेमिंग काफी सफल है। अनुमान है कि भारत में क्रिकेट गेमिंग का बाजार तेजी से बढ़ता जा रहा है। ऐसे में आईसीसी इसका लाभ उठाना चाहती है। जिससे वह इस क्षेत्र में अपनी मौजूदगी को मजबूत करने के साथ ही लाखों डॉलर का लाभ उठा सके।

श्रेयस, रविंद्र और डफी आईसीसी के मार्च महीने के सर्वश्रेष्ठ अवार्ड की दौड़ में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने भारतीय टीम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को न्यूजीलैंड के रचिन रविंद्र और जैकब डफी के साथ मार्च महीने के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर पुरस्कार के लिये नामांकित किया है। श्रेयस का प्रदर्शन पिछले कुछ समय से शानदार रहा है। चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम की जीत में उन्होंने अहम भूमिका निभाई थी। उसमें अय्यर ने पांच मैचों में दो अर्धशतकों की सहायता से 243 रन बनाये थे। आईसीसी ने कहा, ''इस बल्लेबाज ने तीन एकदिवसीय में 57.33 की औसत से 172 रन बनाये और टूर्नामेंट में भारतीय टीम की ओर से सबसे ज्यादा रन बनाये। भारतीय टीम की खिताबी जीत में भी श्रेयस की अहम भूमिका रही।

उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ ग्रुप ए के मैच में 79 रन बनाये और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में 45 रन बनाये। इसके अलावा न्यूजीलैंड के खिलाफ फाइनल में 48 रन भी बनाये।'' विश्व क्रिकेट की शीर्ष संस्था के अनुसार श्रेयस की पारी के सूत्रधार की भूमिका निभाने और साझेदारियां बनाने की क्षमता काफी महत्वपूर्ण साबित हुई।

धोनी को लेकर नवजोद सिंह सिद्धू उड़ाया अंबाती रायुडू का मजाक

नई दिल्ली (एजेंसी)। पांच बार की चैंपियन टीम चेन्नई सुपर किंग्स का आईपीएल 2025 में सफर खत्म होने की कगार पर है। टीम को एक बार फिर हार झेलनी पड़ी है। पंजाब किंग्स ने उसे 18 रनों से हरा दिया। इस मैच में धोनी पांच नंबर पर बल्लेबाजी करने आए थे। यहां तक कि डेवोन कॉन्वे को रिटायर करके रविंद्र जडेजा को लाया गया। बावजूद सीएसके मैच हार गई। चेन्नई के हारने के बाद सोशल मीडिया पर सीएसके के पूर्व खिलाड़ी अंबाती रायुडू का खूब मजाक उड़ा। असल में रायुडू ने सीएसके के समर्थन में कई बातें कहीं थीं। अंबाती रायुडू चेन्नई सुपर किंग्स के लिए किसी से भी भिड़ जाते हैं। इसी कड़ी में वह पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच के दौरान नवजोत सिंह सिद्धू से भिड़ गए। दोनों के बीच बहस हुई। जब धोनी बल्लेबाजी करने के लिए मैदान में उतर रहे थे तो सिद्धू ने कहा कि धोनी आज भागकर आ रहे हैं। इस बार इंटेंट भागने से ही पता लग रहा है। इस पर रायुडू ने कहा कि, जी हां बिल्कुल धोनी की चाल देखिए। बल्ला नहीं, तलवार लेकर आ रहे हैं। आज धोनी तलवार चलाएंगे। इस पर सिद्धू कहते हैं कि अरे यार, बल्लेबाजी करने आ रहे हैं या युद्ध लड़ने। इसी दौरान सिद्धू और अंबाती का एक और वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें रायुडू सिद्धू से कह रहे हैं कि इतनी तेज से तो गिरगिट भी रंग नहीं बलता,

जितनी तेजी से आप टीम बदल रहे हैं। इसके जवाब सिद्धू कहते हैं कि गिरगिट अगर किसी का आराध्य देव है तो तुम्हारा है। इसे धोनी पर निशाना माना जा रहा है। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मैच में भी सिद्धू ने कमेंट्री करते हुए धोनी पर निशाना साधा था। हालांकि, इस पर संजय बांगर ने जवाब देना चाहा तो रायुडू ने फिर से कहा कि, संजय भाई, कप्तान को अकेला छोड़ दिया जाना चाहिए। इसके बाद संजय बांगर भी कहां चुप बैठे उन्होंने रायुडू से कहा कि आप ये सारी बातें इसलिए कह रहे हो क्योंकि आपने किसी आईपीएल टीम की कप्तानी नहीं की है। रोहित शर्मा ने पांच बार आईपीएल ट्रॉफी जीती है।

कई मैच होने के बाद कौन सी टीम पहुंच सकेगी प्लेऑफ में

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के सीजन में अबतक 22 मुकाबले खेले जा चुके है। हर मैच के साथ प्लेऑफ में पहुंचने की जंग और अधिक रोमांचक हो रही है। पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स इस बार प्लेऑफ में पहुंचने के लिए काफी संघर्ष करती दिख रही है। दोनों ही टीमों ने शुरुआती कुछ मुकाबले हार दिए हैं जिसके बाद प्लेऑफ में पहुंचना टीमों के लिए मुश्किल का सौदा हो गया है। इस बार आईपीएल पॉइंट्स टेबल में जो टीमें शीर्ष पर हैं उनमें से तीन टीमें ऐसी हैं जिनके पास आईपीएल ट्रॉफी नहीं है। इस बार पॉइंट्स टेबल में शीर्ष पर दिल्ली कैपिटल्स है, दूसरे पायदान पर गुजरात टाइटंस, तीसरे पायदान पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और चौथे नंबर पर पंजाब किंग्स ने कब्जा जमाया हुआ है। इस टूर्नामेंट में प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करने से पहले हर टीम को 14-14 मुकाबले खेलने होंगे। इन मुकाबलों को खेलने के बाद ही शीर्ष स्थान पर आई टीमें प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई करेंगी। अन्य टीमें आईपीएल सीजन से बाहर हो जाएंगी।

दिल्ली कैपिटल्स

आईपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल्स की अगुवाई अक्षर पटेल कर रहे है। इस सीजन में दिल्ली कैपिटल्स ही ऐसी टीम है जो कोई मुकाबला नहीं हारी है। दिल्ली कैपिटल्स ने तीन मैच खेले हैं और तीनों में जीत दर्ज की है। छह अंकों के साथ दिल्ली कैपिटल्स का रन रेट (+1.257) पर बना हुआ है। प्लेऑफ में पहुंचने के लिए दिल्ली कैपिटल्स को यही प्रदर्शन जारी रखना होगा। उसे 11 में से 5 मैच जीतने होंगे।

गुजरात टाइटंस

गुजरात टाइटंस की कप्तानी शुभमन गिल के हाथों में है। इस सीजन में चार में से तीन मुकाबलों में जीत दर्ज करने वाली गुजरात टाइटंस छह अंकों के साथ दूसरे पायदान पर है। टीम का नेट रन रेट +1.031 का है। प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए गुजरात टाइटंस को 10 शेष मुकाबलों में से पांच में जीत हासिल करनी होगी।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु

ऋतुराज गायकवाड़ के नेतृत्व वाली रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु इस सीजन में मजबूती के साथ खेल रही है। आरसीबी के बल्लेबाज और गेंदबाज दोनों ही अच्छे फॉर्म में दिख रहे है। चार मैच खेल चुकी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु अबतक तीन मुकाबले जीत चुकी है। टीम का नेट रनरेट +1.015 का बना हुआ है। पॉइंट्स टेबल में दिल्ली कैपिटल्स, गुजरात टाइटंस के बाद रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु तीसरे पायदान पर बनी हुई है। प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए दमदार खेल दिखाते हुए टीम को 10 में से कम से कम पांच मुकाबले जीतने होंगे।

पंजाब किंग्स

पंजाब किंग्स की अगुवाई इस बार श्रेयर अय्यर के हाथों में है। उनके नेतृत्व में टीम ने चार में से तीन मुकाबले जीते है। टीम के बल्लेबाजों की फॉर्म जबरदस्त है। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में पंजाब किंग्स शानदार खेल दिखा रही है। पंजाब किंग्स चौथे पायदान पर बनी हुई है। प्लेऑफ में जगह पाने के लिए उसे 10 में से पांच मुकाबले जीतने होंगे।

लखनऊ सुपर जायंट्स

लखनऊ सुपर जायंट्स की कमान इस सीजन के सबसे महंगे खिलाड़ी ऋषभ पंत के हाथों में है। ऋषभ पंत की कप्तानी में लखनऊ सुपर जायंट्स पांच में से तीन मुकाबले जीत चुकी है। टीम पॉइंट्स टेबल पर पांचवे पायदान पर है। टीम को नौ मुकाबले खेलने है, जिनमें से पांच मैचों में जीत हासिल करनी होगी ताकि प्लेऑफ में जगह बना सके।

कोलकाता नाइट राइडर्स

स्टार खिलाड़ी अजिंक्य रहाणे की कप्तानी वाली केकेआर ने इस सीजन की शुरुआत हार के साथ की थी। हालांकि इसके बाद से ही टीम संभल चुकी है और अपना दमदार खेल दिखाने की कोशिश कर रही है। पांच में से टीम सिर्फ दो मुकाबले जीत सकती है जबकि तीन में उसे हार मिली है। केकेआर को प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए नौ में से छह मुकाबलों में जीत हासिल करनी होगी।

राजस्थान रॉयल्स

राजस्थान रॉयल्स ने इस सीजन की शुरुआत में ही संजू सैमसन की कप्तानी में दो मुकाबले गंवा दिए।

इसके बाद दो मैचों में जीत हासिल कर वापसी की कोशिश भी की है। राजस्थान को अभी 10 मुकाबले खेलने हैं जिनमें से उसे छह मुकाबले जीतने होंगे ताकि प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीद बनी रहे।

युजवेंद्र चहल के साथ युजवेंद्र चहल ने शेयर की तस्वीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब किंग्स के स्टार गेंदबाज युजवेंद्र चहल इन दिनों चर्चा में है। पहले कोरियोग्राफर और एक्ट्रेस धनश्री के साथ उनका तलाक सुर्खियों में रहा वहीं अब इंफ्लूएंसर और आरजे महवश के साथ उनके अफेयर की अफवाहों की चर्चा है। दोनों कई जगह एक साथ नजर आ चुके हैं। महवश ने अब एक युजवेंद्र चहल के साथ तस्वीर शेयर करके इन अफवाहों को और हवा दे दी। दरअसल, महवश बीते मंगलवार को चेन्नई सुपर किंग्स और पंजाब किंग्स के बीच हुआ मैच देखने मुल्लानपुर स्टेडियम पहुंची। इस दारन उन्होंने पंजाब किंग्स के खिलाड़ियों के वाइफ और गर्लफ्रेंड्स के साथ बैठकर मैच देखा। वह शशांक सिंह की गर्लफ्रेंड मुस्कान, हरप्रीत बरार की पत्नी के साथ नजर आईं। उन्होंने स्टैंड्स से तस्वीर शेयर की। महवश ने कैप्शन में लिखा कि, ये अपने लोगों का हर मुश्किल में साथ देने के लिए और एक रॉक तरह खड़े रहने के लिए। हम सभी यहां आपके लिए हैं युजवेंद्र चहल। वहीं महवश के इस पोस्ट को चहल ने भी शेयर किया। उन्होंने जो तस्वीर शेयरकी है उसमें चहल और महवश सेल्फी लेते हुए नजर आ रहे हैं। ये मैच के दिन की ही तस्वीर है लेकिन कहां की है ये साफ नहीं है। उन्होंने सलमान खान की फिल्म ट्यूबलाइट का गाना नाच मेरी जान की शुरुआती लाइनें बैकग्राउंड में लगाई। इस गाने के बोल तू ही मेरे क्रिकेट का छक्का, मैं अलादीन, तू मेरा जिन्न, मैं अधूरा तेरे बिन। महवश ने अपनी ही पोस्ट इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए लिखा कि, इस साल पंजाब किंग्स को सपोर्ट कर रही हूं क्योंकि हम दोस्त तमीज से निभाते हैं।

ग्लेन मैक्सवेल पर बीसीसीआईने लगाया जबरदस्त जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब किंग्स के ऑलराउंडर खिलाड़ी ग्लेन मैक्सवेल पर बीसीसीआई ने एक्शन लिया है। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेले गए मुकाबले में ग्लेन मैक्सवेल ने आचार संहिता का उल्लंघन किया था। इसे देखते हुए बीसीसीआई ने यह कदम उठाया है। बीसीसीआई ने ग्लेन मैक्सवेल पर मैच फीस का 25 फीसदी जुर्माना लगाया है। सिर्फ यही नहीं बीसीसीआई ने उनको एक डिमेरिट अंक दिया है। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मुकाबले में पंजाब किंग्स ने 18 रनों से जीत दर्ज की थी। इस मैच के स्टार खिलाड़ी प्रियांश आर्य रहे थे जिन्होंने 42 गेंदों में 103 रनों की धमाकेदार पारी खेली थी। इस पारी की बदौलत मैच में वो प्लेयर ऑफ़ द मैच चुने गए थे। वहीं आईपीएल ने बीसीसीआई द्वारा लिए गए एक्शन पर बयान जारी किया है। आधिकारिक बयान के

अनुसार पंजाब किंग्स के ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल पर न्यू चंडीगढ़ के न्यू पीसीए स्टेडियम में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ खेले गए मैच में आचार संहिता का उल्लंघन करने का आरोप लगा है। आईपीएल में उनपर मैच फीस का 25 फीसदी जुर्माना लगाया गया है। उन्होंने एक डिमेरिट अंक भी हासिल कर लिया है। ग्लेन मैक्सवैल ने अनुच्छेद 2.2 (मैच के दौरान फिक्स्चर और फिटिंग का दुरुपयोग) के तहत उल्लंघन किया है। ग्लैन ने अपनी गलती स्वीकारी है। उन्होंने मैच रेफरी द्वारा दी गई सजा को भी स्वीकार किया है। बता दें कि आईपीएल 2025 के सीजन में ग्लैन मैक्सवेल बल्ले से कोई कमाल नहीं कर सके है। तीन पारियों में उन्होंने महज 31 रन बनाए है। राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मैच में ग्लेन के बल्ले से 30 रन निकले थे। वहीं गुजरात टाइटंस के खिलाफ वो खाता भी नहीं खोल कते थे। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मुकाबले में वो सिर्फ एक रन बनाकर पवेलियन चलते बने थे। हालांकि ग्लैन मैक्सवेल की गेंद अच्छा योगदान दे रही है। वो अबतक सीजन में तीन विकेट चटका चुके है।

विराट कोहली ने अपनी सफलता का राज खोला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सलामी बल्लेबाज विराट कोहली ने कहा कि उनका मूल सिद्धांत अंहकार पर काबू रखते हुए मैच की परिस्थितियों के हिसाब से बल्लेबाजी करना है। मौजूदा दौर के सबसे सफल बल्लेबाजों में से एक कोहली ने हाल ही में एक और उपलब्धि हासिल की। वह टी20 फॉर्मेट में 13000 रन बनाने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए। कोहली ने जियो हॉटस्टार से बात करते हुए कहा कि, बल्लेबाजी कभी अंहकार के बारे में नहीं है। ये कभी किसी को मात देने की कोशिश नहीं है। मेरे लिए ये हमेशा खेल की स्थिति को समझने के बारे में रहा है। ये कुछ ऐसा है कि जिस पर मुझे हमेशा गर्व है। कोहली ने आगे कहा कि, मैं परिस्थितियों के अनुसार खेलना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि, अगर मैं लय में होता हूं तो मैं स्वाभाविक रूप से जिम्मेदारी उठाने की पहल करता। अगर कोई और बेहतर तरीके से खेल रहा होता है तो वह ऐसा करता है। इसके अलावा कोहली ने ये भी माना

कि आईपीएल से उन्हें टी20 फॉर्मेट को समझने का मौका मिला है। कोहली आईपीएल में सबसे ज्यादा शतक और रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 256 मैचों में आठ शतकों के साथ 8168 रन बनाए हैं। इस 36 साल के खिलाड़ी ने कहा कि उन्होंने 2011 सत्र के बाद से इस फॉर्मेट की जरूरतों को समझ लिया। उन्होंने कहा कि आरसीबी के साथ अपने पहले तीन सालों में मुझे टॉप ऑर्डर में बल्लेबाजी करने का मौके नहीं मिले। मुझे आमतौर पर निचले क्रम में भेजा जाता था। ऐसे में मैं उस दौरान आईपीएल में बड़े पैमाने पर सफल नहीं हो पाया। कोहली ने कहा कि मैंने साल 2010 से अच्छा प्रदर्शन करना शुरू किया और 2011 से नियमित तौर पर तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करने लगा। तब से मैंने निरंतरता के साथ अच्छा प्रदर्शन किया है। वहीं विराट कोहली ने स्वीकार किया कि लीग में 18 साल बिताने से उन्हें क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट में अपने कौशल को निखारने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि, आईपीएल आपको बहुत ही अनोखे तरीके से चुनौती देता है क्योंकि इस लीग की संरचना काफी अलग है। ये एक छोटी द्विपक्षीय सीरीज की तरह नहीं है, ये कई हफ्तों तक चलता है और अंक तालिका में आपकी स्थिति बदलती रहती है। लगातार बदलते परिदृश्य से अलग अलग तरह के दबाव आते हैं।

नवागत आईजी ने अपराध पर नियंत्रण पाने लागू किए पुलिसिंग के नए नियम

अब बाइक से शहर की तंग गलियों मे भ्रमण करेगी पुलिस
नशे की कमर तोड़ने एंटी ड्रग कैंपेन की शुरुआत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जोन पुलिस की कार्यप्रणाली इन दिनों अचानक बदल गई है, लग्जरी वाहनों में घूमने वाली पुलिस अब दो पहिया वाहनों से गश्त करते नजर आ रही है और पुलिस अब चौराहों से हटकर गली मोहल्लों में अपनी मौजूदगी का एहसास करा रही जिसका कारण है नवागत पुलिस महानिरीक्षक गौरव राजपूत की पदस्थापन

दरअसल हालही में नवागत आईजी की पदस्थापना मुख्यालय द्वारा की गई है और अपनी जिम्मेदारी संभालते हुए ही आईजी गौरव राजपूत ने रीवा जोन की पुलिसिंग व्यवस्था में बदलाव लाने के संकेत दिए थे, जो पदभार संभालने के बाद 48 घंटे में ही नजर भी आने लगी थी। बदलाव की तस्वीर रीवा संभाग के अलग-अलग जिलों में नजर आई है। जहां अब पुलिसिया टीम व्यवस्था बनाने बाइक का सहारा ले रही।

बता दें अब तक पुलिस की टीम तंग गलियों में भीड़ भाड़ इलाकों में लक्जरी वाहनों से गश्त करते नजर आती थी जो अब दो पहिया वाहनों में नजर आ रही है, नवागत आईजी गौरव राजपूत द्वारा पुलिस को सीधा आम लोगों तक पहुंचाने व संवाद स्थापित करने के लिए यह प्रयोग किया गया है। पुलिस महानिरीक्षक गौरव राजपूत का मानना है कि इस प्रयोग से पुलिस आसानी से जनता से संवाद स्थापित कर पाएगी और गली मोहल्ले में उपद्रता मचाने वाले बदमाशों तक आसानी से पहुंच पाएगी। इस संबंध में पुलिस महानिरीक्षक गौरव राजपूत ने सभी जिलों के पुलिस अधीक्षकों को निर्देश जारी किया हैं। जिसके बाद हर थाने से चार-चार टीमों का गठन किया गया है, जो अपने-अपने क्षेत्र में बाइक से भ्रमण करेगी। यह टीमें प्रतिदिन शाम 7 बजे से देर रात तक तंग गलियों में भी गश्त करेंगी। इस दौरान नशेड़ी व्यक्तियों की पहचान कर उन पर कार्रवाई की जाएगी।वाहन चालकों के खिलाफ पुलिस बड़े स्तर पर चेकिंग अभियान चलाएगी। 9 बिंदुओं पर जांच की जायेगी। पुलिस टीम चेकिंग लगाकर नियमों के पालन की समझाइश देगी, इसके बाद जिन वाहन चालकों द्वारा नियमों की अनदेखी की जाएगी उनके खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। इसमें बिना बीमा, फिटनेस, 15 वर्ष से पुराने वाहनों के लाइसेंस का नवीनीकरण, नियम विरुद्ध ईरिक्सा चालकों की आरसी, हेलमेट, ओवर स्पीड, ड्रिंक एण्ड ड्राइव व पीयूसी सर्टिफिकेट शामिल हैं।

पुलिस अब 5 घण्टे करेगी नियमित गश्तः नवागत आइजी गौरव राजपूत रीवा जोन ने बीते बुधवार को कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करने और अपराध नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकों (एएसपी) की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की। उन्होंने जिलावार अपराधों की समीक्षा की और पुलिस कार्रवाई की जानकारी ली। अपहृत नाबालिग बच्चों को बरामद करने के लिए विशेष अभियान शुरू करने निर्देश दिया। इसके तहत सभी जिलों में विशेष टीमें गठित की जाएंगी, जो नाबालिग बच्चों को सकुशल उनके परिजनों को सौपेंगी। आइजी ने रात्रि गश्त को अनिवार्य करते हुए निर्देश दिए कि पुलिस बल संवेदनशील क्षेत्रों में शाम 6 बजे से रात 11 बजे तक नियमित गश्त करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की शिकायतों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

आईजी रीवा ने साफ किया है कि स्कूल-कॉलेज के आसपास सतर्कता, सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए ब्लैक स्पॉट चिन्हित करने और ट्रैफिक नियमों के कड़ाई से पालन भी कराया जाए। इसके साथ ही सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु ब्लैक स्पॉट चिन्हित कर प्रभावी उपाय लागू किए जाएंगे। ट्रैफिक नियमों के पालन के लिए सख्ती बरती जाएगी साथ ही साइबर क्राइम, महिला अपराध और अन्य गंभीर अपराधों की रोकथाम के लिए विशेष टीमों का गठन किया जाएगा। आईजी गौरव राजपूत ने सभी अधिकारियों को निर्देशित भी किया है।

आईजी ने जिले के सभी पुलिस अधिकारियों व थाना प्रभारी की ली पहली बैठक

रीवा ज़ोन के नवागत आईजी गौरव राजपूत ने बुधवार करे रीवा ज़िले के पुलिस अधिकारियों व थाना प्रभारी की पहली बैठक ली। इस दौरान उन्होंने नवरात्रि पर कानून व्यवस्था बनाए रखने को लेकर सभी पुलिस अधिकारियों और थाना प्रभारी को बधाई दी। इसके साथ ही आईजी ने आज से दो अभियानों की शुरुआत रीवा ज़ोन में की है। आईजी ने बताया कि आज से नशा कारोबारियों की कमर तोड़ने के लिए एंटी ड्रग कैंपेन की शुरुआत की जा रही है। इस कैंपेन के तहत मेडिकल नशा सहित गांजा, चरस, अफीम कोकिन जैसे जानलेवा नशा पर रोक लगाने और जड़ से खत्म करने के प्रयास किए जाएंगे साथ ही आम लोगों के मन में पुलिस के प्रति भरोसा और विश्वास पैदा करने के लिए बाइक गश्त अभियान की शुरुआत की गई है। जो अनिवार्य रूप से हर थाना प्रभारी द्वारा अपने क्षेत्र में कराई जाएगी और शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र के हर गली मोहल्ले में पुलिस बाइक से भ्रमण करेगी ये अनिवार्यता शाम 6 बजे से रात्रि 12 बजे तक रखी गई है।

दैनिक मीडिया ऑडीटर से बातचीत में बोले आईजी-नशे की कमर तोड़नी है

इसके साथ ही दैनिक मीडिया ऑडीटर से खास बातचीत करते हुए आईजी गौरव राजपूत ने कहा कि रीवा की सबसे बड़ी समस्या बढ़ रहा नशे का कारोबार है जिसपर अंकुश लगाने वह प्रतिबद्धता से कार्य करेंगे और इसके लिए सबसे पहले उन स्थानों को चिन्हित किया जाएगा जो नशे की बिक्री का गढ़ बने हुए हैं जहां से नशे की कमर तोड़ कार्यवाही की जाएगी

कलेक्टर ने स्कूलों के समय में परिवर्तन के दिए आदेश

सुबह 7.30 से दोपहर 12.30 तक लगेंगी कक्षाएं

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में ही तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंच रहा है। सुबह 10 बजे के बाद से ही गर्म हवाओं का प्रकोप शुरू हो जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए कलेक्टर प्रतिभा पाल ने स्कूलों के समय में परिवर्तन के आदेश दिए हैं। जारी आदेश के अनुसार सभी शासकीय और अशासकीय स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, आईसीएसई तथा सीबीएसई पैटर्न में संचालित स्कूलों में कक्षाएं सुबह 7.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक संचालित करें। इसमें नर्सरी से कक्षा 12 तक की सभी कक्षाएं शामिल हैं। कोई भी स्कूल दोपहर 12.30 बजे के बाद कक्षाएं संचालित नहीं करेगा। लेकिन स्कूलों में उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही होगा। कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी तथा जिला समन्वयक शिक्षा मिशन को आदेश का पालन कराने के निर्देश दिए हैं।

पुस्तकों का तीन दिन में शत-प्रतिशत वितरण कराने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने निःशुल्क पुस्तक वितरण तथा विद्यार्थियों के शाला प्रवेश की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि सभी बीआरसी तीन दिन में प्राप्त पुस्तकों का शत-प्रतिशत वितरण कराकर प्रधानाध्यापकों से ऑनलाइन रिपोर्ट दर्ज कराएं। शाला तक पुस्तक पहुंचाने के लिए परिवहन की समुचित व्यवस्था करें। तय समय सीमा में पुस्तक वितरण न होने पर बीआरसी के विरूद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। त्योंथर और सिरमौर बीआरसी पुस्तक वितरण पर विशेष ध्यान दें।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि नया शिक्षा सत्र शुरू हुए एक सप्ताह से अधिक का समय हो गया है। अभी भी पोर्टल पर कक्षा एक से कक्षा 6 तक दर्ज विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है। पोर्टल पर विद्यार्थियों की कक्षावार जानकारी उपलब्ध है। इसे एजुकेशन पोर्टल 3 पर दो दिवस में अपडेट कराएं। सभी स्कूलों और विद्यार्थियों की मैपिंग करके कक्षा दो से कक्षा छः तक की जानकारी दो दिवस में अनिवार्य रूप से दर्ज कराएं। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कोई भी विद्यार्थी शाला त्यागी न रहे। प्रधानाध्यापक और जनशिक्षक के माध्यम से पोर्टल पर अद्यतन जानकारी दर्ज करें। बैठक में जिला समन्वयक शिक्षा केन्द्र विनय मिश्रा ने पुस्तकों के वितरण तथा विद्यार्थियों के शाला प्रवेश की विकासखण्डवार जानकारी दी। बैठक में सभी बीआरसी उपस्थित रहे।

वाहन चेकिंग के दौरान पकड़ी मऊगंज विधायक की गाड़ी

बैठी थीं विधायक की पत्नी, फोन आते ही लौटाई चाबी, पुलिस ने बिना कार्रवाई छोड़ी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मंगलवार देर रात रीवा के शिल्पी प्लाजा में यातायात पुलिस द्वारा चलाए जा रहे वाहन चेकिंग अभियान के दौरान मऊगंज विधायक की स्कॉर्पियो को रोका गया, लेकिन फोन आने के बाद बिना कार्रवाई के छोड़ना पड़ा। वाहन में विधायक प्रदीप पटेल की पत्नी सवार थीं। जानकारी के अनुसार, यातायात पुलिस ने गाड़ी पर लगी अवैध हैलोजन लाइट के कारण वाहन को रोका और चाबी जब्त कर ली। गाड़ी पर लगे विधायक बोर्ड पर कवर लगा था। जैसे ही कवर हटा और विधायक की गाड़ी होने की जानकारी मिली, पुलिस की कार्रवाई रुक गई। वाहन चालक ने किसी से फोन पर बात की और खुद ही चाबी पुलिस को देने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने लेने से इनकार कर दिया। करीब 15 मिनट के इस घटनाक्रम के बाद पुलिस ने बिना हैलोजन लाइट हटवाएं ही गाड़ी जाने दी। इतना ही नहीं, चेकिंग के दौरान रोके गए अन्य वाहनों को भी बिना कार्रवाई के छोड़ दिया गया।

यातायात डीएसपी हिमाली पाठक ने बताया कि पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि मामले की जांच की जा रही है और जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकेगा।

कई दिनों से इलाज के लिए एसजीएमएच में भटक रहे परिजन

रीवा में हीमोफीलिया से ग्रसित मरीज परेशान, अस्पतालों में फैक्टर 9 इंजेक्शन की किल्लत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में हीमोफीलिया से ग्रसित मरीज खासा परेशान हैं। जिनका सही समय पर इलाज नहीं हो पा रहा है। दरअसल मरीज हीमोफीलिया के इलाज में प्रयोग किए जाने वाले फैक्टर 9 इंजेक्शन की उपलब्धता ना होने के कारण मुसीबत में हैं। जिसकी जिलेभर के अस्पतालों में किल्लत है।

जानकारी के मुताबिक बहुत जरूरत पड़ने पर सतना से इस इंजेक्शन को लाने के लिए वाहन भेजा जाता है। अन्यथा मरीज को दो टूक इंजेक्शन ना होने की बात कह दी जाती है। बुधवार को भी ऐसा ही एक मामला संजय गांधी स्मृति अस्पताल से सामने आया। आरोप है कि संभाग के सबसे बड़े संजय गांधी स्मृति अस्पताल में इंजेक्शन ना होने के कारण हीमोफीलिया से ग्रसित मरीज को लेकर परिजन कई दिनों से भटक रहे हैं।

परिजनों ने बताया कि फैक्टर 9 इंजेक्शन संजय गांधी हॉस्पिटल में नहीं है। डॉक्टरों द्वारा उन्हें बोला गया कि यह इंजेक्शन बाहर मिलेगा। इसलिए अस्पताल में इलाज नहीं हो पाएगा। हम मरीज के इलाज के लिए 2 दिन से भटक रहे हैं।

परिजन रोहित मिश्रा ने आरोप लगाया कि डॉक्टर्स ने कहा है कि आपको मरीज को जहां ले जाना है,आप ले जाइए। इसलिए हम कई दिनों से मरीज को इलाज के लिए लेकर भटक रहे हैं। इस बीमारी में मरीज को तत्काल इलाज न होने पर उसकी मौत भी हो सकती है। ऐसे में भला हम क्या करें। अथक प्रयास के बाद भी हमारे मरीज का इलाज नहीं हो पा रहा है। मेरा भाई मोहित गंभीर स्वास्थ्य समस्या से गुजर रहा है।

अब जानिए क्या है हीमोफिलिया

पैतृक रक्तस्राव या हीमोफिलिया एक आनुवांशिक विकार है जो आमतौर पर पुरुषों को होता है और औरतों द्वारा फैलता है। हीमोफीलिया आनुवंशिक रोग है जिसमें शरीर के बाहर बहता हुआ रक्त जमता नहीं है। इसके कारण चोट या दुर्घटना में यह जानलेवा साबित होता है क्योंकि रक्त का बहना जल्द ही बंद नहीं होता।

जरूरत पड़ने पर मिल जाता है इंजेक्शन

बताया गया कि जिले भर के शासकीय अस्पतालों में इस इंजेक्शन की किल्लत है। जो लंबे समय से स्टॉक के बाहर है। हालांकि संजय गांधी अस्पताल प्रबंधन का दावा है कि जरूरत पड़ने पर उन्हें यह इंजेक्शन मिल जाता है। जबकि ताजा मामला भी इसी अस्पताल से सामने आया है।

दो-चार इंजेक्शन हमारे पास एडवांस में रहते हैं

वहीं फैक्टर 9 इंजेक्शन के बारे उपलब्धता के बारे में जब संजय गांधी हॉस्पिटल के अधीक्षक राहुल मिश्रा से बात की गई तो उन्होंने सफाई दी। अधीक्षक ने बताया कि सेक्टर 9 इंजेक्शन का डिपो सतना में है। इस इंजेक्शन की पर्याप्त रूप से उपलब्धता संजय गांधी हॉस्पिटल में है। जरूरत पड़ने पर सतना से मंगवा लेते हैं। दो-चार इंजेक्शन हमारे पास एडवांस में रहते हैं।

नवकार महामंत्र विश्व में सद्भाव और शांति की स्थापना का प्रभावी सूत्र

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि नवकार महामंत्र जैन धर्म का सबसे पावन एवं शक्तिशाली मंत्र है, जो विनम्रता, अहिंसा, भाईचारे और आत्मशुद्धि का संदेश देता है। यह मंत्र न केवल मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन का माध्यम है, बल्कि विश्व में सद्भाव और शांति की स्थापना का प्रभावी सूत्र भी है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने विश्व नवकार महामन्त्र दिवस पर रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में मुनि आचार्य प्रमाण सागर जी महाराज एवं अन्य आचार्य गण से आशीर्वाद प्राप्त किया।

तेज़ रफ्तार ट्रक ढाबे में घुसा, एक व्यक्ति आया चपेट में

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के चोरहटा थाना क्षेत्र अंतर्गत चोरहटा बाईपास में पुराने टोल प्लाज़ा के समीप मंगवार देर रात सतना से रीवा की ओर आ रहा तेज़ रफ्तार ट्रक अनियंत्रित पुराने बंद पड़े ढाबे में जा घुसा।

जिससे ढाबे की दीवार ढह गई। उसके बगल में सो रहा एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, वहीं ट्रक ड्राइवर वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। घटना के संबंध में लवकुश तिवारी ने बताया कि घायल सुखलाल यादव बिल्डिंग का काम करते हैं और वो बीती रात ढाबे के बगल में सो रहे थे। इसी दौरान देर रात एक ट्रक जो सतना से रीवा की ओर आ रहा था अनियंत्रित होकर ढाबे में जा घुसा। जिससे ढाबे के बगल में सो रहा सुखलाल यादव उसके नीचे दब गया। सुखलाल के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ सुनकर उसे मलवा हटाकर बाहर निकाला गया। और उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल लाया गया।

सड़क पर गड्ढे के चलते हादसे का शिकार हुआ आर्मी का वाहन, जवान घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। खराब सड़क के चलते रीवा में आर्मी का वाहन हादसे का शिकार हो गया। जिससे एक जवान घायल हो गया। जिसे रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया गया है कि आर्मी के जवान लखनऊ से जबलपुर आर्मी की गाड़ियों में सवार होकर जा रहे थे। तभी रीवा शहर से पहले गाड़ी सड़क पर बने गड्ढे के ऊपर से निकली तो, गाड़ी में पीछे बैठा आर्मी का जवान नीचे गिर गया, जिससे जवान की उंगली टूट गई।

मऊगंज में ट्रैक्टर ट्रॉली पलटने से युवती की मौत, 17 घायल, 11 गंभीर रीवा रेफर

हंसलो गांव के पास पहिया निकलने से हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले में मंगलवार रात एक बड़ा हादसा हुआ है। लौर थाना क्षेत्र के हंसलो गांव के पास ट्रैक्टर का पहिया निकल जाने से ट्रॉली पलट गई। इस हादसे में एक युवती की मौत हो गई और 17 लोग घायल हुए हैं।

घटना नईगढ़ी थाना क्षेत्र के पुरैनी गांव से देवी पूजा कर मनगवां थाना क्षेत्र के समान गांव लौट रहे श्रद्धालुओं के साथ हुई। ट्रैक्टर ट्रॉली में करीब 30 लोग सवार थे। घायलों को तत्काल नईगढ़ी अस्पताल ले जाया गया।

मृतका की पहचान शिवानी साकेत (18) पिता मोहनलाल साकेत निवासी समान थाना मनगवांके रूप में हुई है। वह मोहनलाल साकेत की पुत्री थी। गंभीर रूप से घायल 11 लोगों को संजय गांधी मेडिकल कॉलेज रीवा रेफर किया गया है। बाकी घायलों ने निजी अस्पतालों में इलाज कराया।

तहसीलदार मणिराज सिंह बागरी ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का हालचाल जाना। मृतका के शव को सीएचसी नईगढ़ी की मर्चुरी में रखा गया है। पंचनामे के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जाएगी।

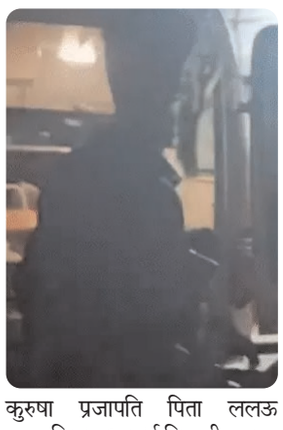

हादसे में घायल लोगों के नामःनिशा साकेत पिता लालजी साकेत उम्र 17 वर्ष निवासी समान थाना मनगवां, सीमा साकेत पति सुरेश साकेत उम्र 45 वर्ष निवासी समान थाना मनगवां, राहुल साकेत पिता जानकी साकेत उम्र 37 वर्ष निवासी टिकरी 37 थाना मनगवां, सुधा साकेत पिता बुद्ध से साकेत उम्र 17 वर्ष भलुहई थाना गढ़, खुशी कोल पिता लालू कोल उम्र 13 वर्ष निवासी समान, छोटेलाल साकेत 50 वर्ष निवासी सोनवर्षा लालगांव, भोला साकेत पिता सहदेव साकेत 65 वर्ष निवासी भलुहई थाना गढ़,समय लाल साकेत पिता जोरई साकेत 70 वर्ष निवासी समान, कुरुषा प्रजापति पिता ललऊ प्रजापति उम्र 17 वर्ष निवासी समान, लिलिआ प्रजापति पिता दौलत प्रजापति 17 वर्ष पुरवा, राजमणि साकेत उम्र 70 वर्ष निवासी भलुहई थाना गढ़, लव कुश साकेत सुमंत साकेत उम्र 16 वर्ष अमिलिया थाना गढ़, अमृता साकेत पिता राकेश साकेत उम्र 10 वर्ष निवासी टिकरी 37 मनगवां, विवेक साकेत पिता राकेश साकेत उम्र 8 वर्ष निवासी टिकरी37, रोमा साकेत पति राकेश साकेत उम्र 30 वर्ष निवासी टिकरी 37, आरती प्रजापति पिता गोविंद प्रजापति उम्र 13 वर्ष समान, राकेश साकेत पिता मोहन लाल साकेत उम्र 32 वर्ष निवासी सामान टिकरी मंगला शामिल हैं।

इन्हें किया गया रेफरः सीमा साकेत पति सुरेश साकेत उम्र 45 वर्ष निवासी समान थाना मनगवां, सुधा साकेत पिता बुद्ध से साकेत उम्र 17 वर्ष भलुहई थाना गढ़, निशा साकेत पिता लालजी साकेत उम्र 17 वर्ष निवासी समान, छोटेलाल साकेत 50 वर्ष निवासी सोनवर्षा लालगांव, राजमणि साकेत उम्र 70 वर्ष निवासी भलुहई थाना गढ़, भोला साकेत पिता सहदेव साकेत 65 वर्ष निवासी भलुहई थाना गढ़, आरती प्रजापति पिता गोविंद प्रजापति उम्र 13 वर्ष समान, खुशी कोल पिता लालू कोल उम्र 13 वर्ष निवासी समान, कुरुषा प्रजापति पिता ललऊ प्रजापति उम्र 17 वर्ष निवासी समान, लिलिआ प्रजापति पिता दौलत प्रजापति 17 वर्ष पुरवा, समय लाल साकेत पिता जोरई साकेत 70 वर्ष निवासी समान शामिल हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।